युवा और केरियर चुनने का समय

लक्ष्य पर बड़ी नजर ही अमीरी का बड़ा नजरिया है।

—डा. राम बजाज

उम्मीद और सफलता की किरणें हर जगह पर,
हर स्थान पर हमेशा बाकी रहती हैं,
जिनसे संघर्ष और मेहनत द्वारा कुछ
भी प्राप्त किया जा सकता है।

—डा. राम बजाज

बच्चा जब जन्म लेता है तो सारी दुनिया उसके लिए अनजान होती है। धीरे–धीरे बड़ा होता है और साथ में जानता, समझता जाता है अपने आस–पास के माहौल को। लेकिन माँ–बाप चाहें तो दुनिया को जानने की इस कवायद में अपने लाडले की मदद करके अमीरी का रास्ता आसान बना सकते हैं। अगर जन्म से ही अपने बच्चे का विकास करना है, तो माता–पिता को उसके पास ऐसी ही चीजें इकट्ठी करनी चाहिए जिससे उसका नजरिया विकसित हो सके। इस काम के लिए आपको कुछ नई तकनीकें अपनानी होंगी। छोटे बच्चों में भी संवेदनाएँ होती हैं, जिससे वे समझते हैं अपनी दुनिया को अपने स्तर पर और अपने हिसाब से, लेकिन उन्हें कम उम्र में ज्यादा समझदार बनाया जा सकता है, कुछ नए–नए तरीके अपनाकर, नए–नए आधुनिक गेम्स खिलवाकर। एक बार बच्चे को दुनिया के वातावरण में खुले आकाश में उड़ना सिखला दें तो वो भविष्य की निधि बन सकता है, अन्यथा ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद जो उम्र होती है, तब उसे सारे अहम फैसले लेने होते हैं, जो कि आगे की पूरी जिन्दगी की दिशा और दशा तय करते हैं। माँ–बाप

और खास तौर से युवाओं के सामने इस दौरान कई विकल्प आते हैं, जिनमें से सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करना होता है। साथ ही आती है कई जिम्मेदारियाँ, धन्धे की तलाश, शादी का फैसला और परिवार से जुड़ी जवाबदेही। 99.9999 फीसदी युवा इन दबावों को ठीक से झेल ही नहीं पाते हैं और फिर शुरू होता है अनिर्णय और शंकाओं का दौर।

ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद की जिन्दगी—युवाओं की लाइफ लाइन

ग्रेजुएशन/पोस्ट ग्रेजुएशन करने के बाद आज का युवा इतना भ्रमित हो जाता है कि जिन्दगी के विकास और अमीरी के लिए कैसे और कहाँ से शुरुआत की जाए, निर्णय नहीं ले पाता। बाहर से कल तक खुश दिखने वाला, डिग्री के कागज को सफलता की सीढ़ी समझने वाला नौजवान युवक पूरी तरह से शंकित है। युवाओं की दोराहे पर खड़ी जिन्दगी को अचानक कई बदलावों का सामना करना पड़ता है और ऐसे में चुनाव का फैसला मुश्किल ही नहीं, बड़ा पेचीदा हो जाता है। जिसके कारण से एक किस्म का अकेलापन और अन्तर्द्वन्द्व के भयावह दौर से बेचैनी और असुरक्षा के भाव पैदा होने लगते हैं। इस संघर्ष का मुख्य कारण परिवर्तन तो है ही, परन्तु असली गुनहगार तो अभिभावक ही हैं। किशोरावस्था तक बच्चे परिवार के सुरक्षित और सुकूनभरे माहौल में रहते हैं। फिर उच्च शिक्षा के लिए बाहर जाते हैं, जहाँ शिक्षण संस्थाओं में सिर्फ तयशुदा और अनुशासित वातावरण मिलता है। किसी तरह की व्यावहारिक शिक्षा या अमीर बनने के सपनों की शिक्षा का अभाव तो रहता ही है, लेकिन शिक्षा पूरी होते ही जब बाहर की दुनिया में कदम रखते हैं, तो चारों ओर संघर्ष का वातावरण नजर आता है। बस, यहाँ सिर्फ किताबी ज्ञान के कारण 99.9999 परसेन्ट युवा अनिश्चितता के चलते पढ़ाई, नौकरी, व्यापार या रिश्तों में पिछड़ जाते हैं। दरअसल यह वक्त होता है, जब केरियर बनाना, नए रिश्ते गढ़ना (शादी), परिवार की जिम्मेदारी उठाना और समाज में पहचान स्थापित करना—सब एक साथ घटित होने लगता है। यह परीक्षा की घड़ी होती है, जब सारे संस्कार और धारणाएँ दाँव पर लगे होते हैं और इनसान अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए संघर्ष करता है। अब तक खुशमिजाज, बेपरवाह जिन्दगी जीने वाला किशोर अचानक संघर्ष से रूबरू होता है। उसे आश्चर्य होता है कि युवा जिन्दगी एक झटके में ही बीत गई है। वह अपने

लक्ष्य से कागज की डिग्री की वर्तमान उपलब्धियों से तुलना करता है तो सोचता है कि आखिर गलती कहाँ रह गई? इस गलती का एहसास उसे अभिभावक किशोरावस्था से पहले ही करवा देते तो शायद इस दिन का सामना नहीं करना पड़ता और कालेज शिक्षा के बाद सीधा किसी धन्धे, व्यापार से जुड़ जाने का रास्ता मिल जाता। परन्तु गोल–मोल सपने और ऊँची महत्त्वाकांक्षाओं के चलते वे अपने दोस्तों से तुलना करते हैं और उन जैसे रोल मॉडल बनने की चेष्टा करते हैं जो धीरे–धीरे हताशा का रूप ले लेती है। किशोर अवस्था का नकारात्मक पहलू जब भयानक रूप बन कर सामने आता है तब युवा अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं, वे सिस्टम (तंत्र) के गुलाम होकर रह जाते हैं और फिर आत्मग्लानि में डूब जाते हैं। इस दौरान वे नशे के आदी भी बन सकते हैं। जिसका अन्त कभी–कभी जहर भी हो सकता है।

अच्छे अनुभव, अच्छे संस्कार, बेहतर चाल–चलन,
सुन्दर रहन–सहन और उच्च शिक्षा ही इनसान को
जीने की कला सिखलाती है।

—डा. राम बजाज

जहर के खिलाफ जंग

कुणाल जहर की शीशी मुँह में उड़ेलना चाह रहा था कि एक झटके में शीशी दूर जा गिरी। सामने देखा—पिताजी खड़े थे। वह सिहर उठा, किन्तु तत्काल ही बिफर पड़ा, मुझे मर जाने दीजिए—पापा... मैं जीना नहीं चाहता।

पर, क्यों जीना नहीं चाहते, बेटे?

डैडी, 'परीक्षा के परिणाम' में मुझे प्रोफेसर ने फिजिक्स के प्रैक्टिकल में फेल इसलिए कर दिया, क्योंकि मैं ही एक मात्र विद्यार्थी था जो ट्यूशन नहीं पढ़ता था, जबकि थ्योरी में मुझे नब्बे प्रतिशत अंक प्राप्त हुए हैं।—कुणाल ने एक ही साँस में अपने पापा को बात कह डाली।

अच्छा, इतनी छोटी–सी बात पर आत्महत्या जैसा जीवन के अन्त का अहम फैसला? पिता ने हैरत से पूछा, तो उसने जवाब दिया,

आप इसे छोटी–सी बात कह रहे हैं? यह मेरे केरियर का सवाल था!

अहम सवाल केरियर का नहीं होता, और न ही परीक्षा में फेल करने या फेल होने का होता है। बल्कि अहम सवाल यह है कि दुर्लभ मनुष्य–जीवन को अगर तुम अपने काम में नहीं ले सकते तो क्या यह मानव–समाज की भलाई के काम नहीं आ सकता है? ठीक है बेटा कुणाल, परन्तु मरने से पहले क्या मेरे एक प्रश्न का उत्तर दोगे?

डैडी, क्या प्रश्न है आपका? कुणाल ने उदासी भरे लहजे में पूछा।

यदि तुम दुबारा से परीक्षा में अच्छे नम्बरों से पास हो जाओ, फिर आगे बढ़ते हुए तुम्हारे बड़े सपनों के अनुसार विश्व के बहुत बड़े डॉक्टर बनो और सैकड़ों विद्यार्थियों द्वारा अपना अमूल्य जीवन जहर की शीशी से इसी तरह गँवाने वालों की जान बचाओ। पर इस मानव–समाज की सेवा के लिए UNO (United Nations Organisation) जैसी संस्था तुम्हें सम्मानित करे तो क्या तुम अपने फैसले और इस फेल होने वाली घटना के बारे में फिर से सोचोगे, बेटे कुणाल?

बहुत बड़ी गलती और पछतावा होगा, डैडी।

तो बेटे! इस घटना के कारण आत्महत्या क्यों कर रहे थे, आज?

कुणाल को जिन्दगी की अहम बात का निचोड़ मिल गया। परीक्षाएँ पास करता–करता, आज वो एक बहुत बड़ा डॉक्टर बन गया है। सैकड़ों विद्यार्थियों की जिन्दगी भी उसने बचाई है और देश के राष्ट्रपति ने उसको बहुत बड़ी पदवी से आज सम्मानित भी किया है। उस सम्मान को जब अपने डैडी के चरणों में रख कर स्पर्श किया तो उसकी आँखें भर आईं और अपने पापा से बोला, पापा, उस दिन की घटना ने तो मेरे जीवन का स्वरूप ही बदल दिया है। आज यह जीवन, जिसके दुबारा जन्मदाता आप हैं, अब मेरा नहीं रहा—पूरे समाज और देश का हो गया है। मैं तो यह मान कर और सोच कर अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ कि इस जिन्दगी पर मेरा कोई अधिकार नहीं रहा, अन्यथा आत्महत्या जैसा पाप मैं उस दिन नहीं

करता। किसी भी विद्यार्थी को यह समझ लेना चाहिए कि फेल का अन्त आत्महत्या कदापि नहीं है। अगर कोई अन्त है तो मानव–समाज और देश की सेवा करने में होना चाहिए। इस सेवा में अगर अन्त हो भी जाता है तो उसके लिए गर्व की बात होगी।

आप भी कुणाल जैसे लोगों में शामिल हो जाइये, जो अपने जीवन का मिशन कुछ असाधारण कार्य करने का बना लेते हैं। नवयुवक भटक इसलिए रहा है कि उसे सही दिशा दिखाने वाला 99.9999 प्रतिशत मिलता ही नहीं है। जीरो (Zero) प्रतिशत से कुछ भी ज्यादा बहुत ज्यादा है। आत्महत्या के 99 रास्ते हैं, लेकिन अच्छे जीवन का सिर्फ एक ही रास्ता है। आप इस एक ही रास्ते पर चलते रहेंगे तो मंजिल तक सबसे पहले आप ही पहुँचेंगे। यदि आपने इस घटिया पुराने विचार (आत्महत्या) को त्याग कर नए विचारों को नहीं स्वीकारा तो तुरन्त अपनी नब्ज जाँच लें, हो सकता है आप बहुत पीछे रह गए हों। जिन्दगी जीतने का वादा कीजिए और अपने जीवन में जीतने के लिए नित नया तरीका, नई खोज, आगे बढ़ने और आशा जैसे शब्दों को शामिल कीजिए। मंजिल आपकी होगी, इसके लिए जीतने की कला आनी चाहिए।

इसका हल क्या है? What is the Solution?

इस संघर्ष से बाहर आना आसान तो नहीं है, परन्तु अहम सवाल यह भी है कि ऐसी संघर्षपूर्ण स्थिति के जिम्मेवार आखिर तो माँ–बाप ही हैं, उन्होंने इस दो–राही जिन्दगी की दिशा और दशा के लिए व्यावहारिक और व्यापारिक ज्ञान की शुरुआत मैट्रिक क्लास से क्यों नहीं की?

औसतन 75 साल की जीवन–यात्रा बहुत लम्बी होती है। इसको समझते हुए शिक्षा का और बाद में अनुभव का बहुत महत्त्व भी है। इसलिए शिक्षाकाल इतना लम्बा होता है। जीवन का एक–चौथाई भाग शिक्षा में निकल जाता है। क्या यह विडम्बना की बात नहीं है? इतना बड़ा समय सिर्फ शिक्षा, वो भी स्कूली और कॉलेज शिक्षा में निकाल देना कितनी समझदारी होगी, जरा ध्यान देने और सोचने की बात है।

किशोरों की शिक्षा की पूर्णता जीवन के उद्देश्य को समझने और उसे पूरा कर लेने की योजना (Planning) बना लेने में है। जीवन का लक्ष्य तय कर पाना सबसे कठिन कार्य होता है। यदि किशोर और उनके माँ–बाप इस जीवन के लक्ष्य को आरम्भिक शिक्षा के साथ समायोजित कर दें तो अभ्यास की निरन्तरता व

समय का प्रबन्धन उसमें चार चाँद लगा देगा। किशोर की पूर्णता कोरी शिक्षा से ही नहीं, अनुभव के साथ पूर्णता का फार्मूला कहाँ से प्राप्त करें—बस, इसी उद्देश्य के साथ उसको अनुभवों की शृंखला में पिरो कर बदलती दुनिया में झोंक देवें। भले ही दुनिया बदल रही हो। जीवनशैली में भी बदलाव आता रहता है। हर चीज बदल रही है। साथ में जिन्दगी की रफ्तार में तेजी भी आई है। स्वाद ने भी अपना रंग बदला है। इसके बावजूद बदला नहीं है तो मात्र जिन्दगी को सफल बनाने का सकारात्मक नजरिया। यही तो पकड़ करने की बात है।

अमूमन पानी के जहाज और हवाई जहाज चलाने वाले को सीख दी जाती है कि यदि घने बादल हों, बरसात हो, आँधी और तूफान हो तो अपनी रफ्तार को धीमा कर देना चाहिए, लेकिन चलना जारी रखा जाए। तूफान में फंसने वाले जहाज को तेजी से निकालने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। बस, चाहिए तो अपनी धीमी रफ्तार। गति में समानता–असमानता की रफ्तार कहीं युवाओं को गर्दिश में नहीं धकेल दे! सही दिशा में चलने वाला नौजवान फिर भी कहीं ना कहीं पहुँच ही जावेगा। जिन्दगी को युवा अपने–अपने नजरिए से देखते हैं, अपनी–अपनी स्टाइल (शैली) से जीते हैं, मगर एक बात सब में समान होती है, वह है अमीरी के लिए प्रयत्नशील रहना। अमीरी के लक्ष्य की होड़ युवाओं में समाप्त नहीं होनी चाहिए, लक्ष्य का संकल्प यदि पक्का है तो कोई भटकाव नहीं आयेगा। परन्तु अंधकार से घिरा इनसान दिशाहीन होकर चाहे कितनी ही तेज दौड़ लगाए, अमीरी की मंजिल तो वह प्राप्त ही नहीं कर सकता।

बच्चे आत्महत्या क्यों करते हैं?

ज्यादातर किशोरों द्वारा आत्महत्या करने के पीछे महत्त्वपूर्ण कारण परिवारजनों के साथ उनके तनावपूर्ण सम्बन्ध होते हैं। बच्चे आमतौर पर तीन वजहों से आत्महत्या जैसे कदम उठाते हैं—ये वजहें हैं—परीक्षाओं में बेहतर से बेहतर परिणाम दिखाने का दबाव, जीवन में केरियर सम्बन्धी असफलता की चिंता तथा प्रेम में असफलता। ये तीनों वजहें ऐसी होती हैं, जिनके लिए वस्तुतः कहीं–न–कहीं घर के बड़े लोग खुद ही जिम्मेदार होते हैं। इसके अलावा किशोरों द्वारा आत्महत्या किए जाने की एक ठोस वजह अपने परिजनों से तनावपूर्ण रिश्ते भी होते हैं।

ज्यादातर माँ–बाप अपने बच्चों से पढ़ने में सबसे आगे रहने की अपेक्षा तो करते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि इस कम्पीटीशन के युग में हर बच्चे का

अव्वल रहना संभव नहीं है। आमतौर पर ऐसी स्थितियों में बच्चे आगे बढ़ने की बजाय, पीछे छूटने लगते हैं। जिससे माँ–बाप से रिश्ते तनावपूर्ण हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यदि बच्चा फेल हो गया तो उसे लगता है कि वह अपने माँ–बाप को मुँह कैसे दिखाए? जिसके कारण ही वे आत्महत्या की कोशिश करते हैं।

उपाय क्या है? What is the Solution?

1. अपनी अधूरी इच्छाएँ बच्चों पर न थोपें।
2. परम्परा के नाम पर बच्चों में नैतिकता का कोई मूल्य जबरदस्ती न थोपें।
3. याद रखें, बच्चों को आपकी जरूरत है। उनके साथ सहृदय रहें। अगर उन्हें ज्यादा समय न दें पाएँ तो जितना दे सकें, देवें व गहरी आत्मीयता का परिचय दें।
4. बच्चे को लगना चाहिए कि आपको उनकी चिंता है, सिर्फ परीक्षा–परिणाम की ही नहीं।
5. बच्चे अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं या लाभ–हानि के चलते आत्महत्या नहीं करते। वे आपके गलत व्यवहार और आपके रिश्तों को लेकर आपकी नासमझी के चलते आत्महत्या करते हैं। इसे हर पल याद रखें। ऐसा पल आने ही नहीं देवें।

नौजवानो! घर से भागने का बुखार खत्म करो

कॉलेज पूरा किए विक्रमसिंह को एक साल से ज्यादा हो गया था, परन्तु अभी तक वह निकम्मा बैठा था। पापा कहते थे, मुझे कुछ नहीं चाहिए, बस, तू जाने तेरा काम जाने। परन्तु अनिर्णय और आशंकाओं से घिरे हुए विक्रमसिंह ने अपने शहर आगरा से किसी दूसरे शहर में कुछ भी करने के लिए अपनी सूटकेस में जरूरत के कपड़े, सर्टिफिकेट, सोने की चैन, कुछ रुपये व जरूरत का सामान लेकर, घर छोड़ कर भागने और केवल सफल होकर लौटने का जो कठोर निर्णय लिया, वह निर्णय नहीं, एक भावनात्मक जज्बा था।

भारी शोरगुल और आवाजों ने उसकी नींद खोली तो दिल्ली आ चुकी थी। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और

कहाँ जावे? हार कर बाहर फुटपाथ पर बैठ गया और कालेज के पुराने सपनों में खो गया। तभी किसी के स्पर्श से उसका फ्लेश–बैक भंग हुआ। फुटपाथ पर जहाँ बैठा था वहाँ भी भिखारी लोग पसरने लगे थे। छिः इतने गन्दे, मैले–कुचैले लोग! विक्रमसिंह स्तब्ध खड़ा हो गया। फुटपाथों पर संघर्ष करने की हवा विक्रमसिंह के दिमाग से निकल चुकी थी। दिशाहीन और निर्णयहीन, विक्रम वापस एक दूसरी गाड़ी में जा बैठा जो दुर्भाग्यवश चल कर एक बार फिर उसी के शहर आगरा में आ रुकी। एक बार फिर बवंडर उठने लगा उसके मन में, परन्तु इस बार फिर यह अपने शहर आगरा में उतरने को लेकर था। अभी वह अपनी जुगत में ही था कि उसके पैरों की जमीन खिसक गई। विक्रमसिंह के पापा उसके सामने खड़े घूर रहे थे, परन्तु वह उनकी नजरों का सामना नहीं कर पा रहा था। दूसरे ही क्षण उसके पापा मुस्कराते हुए बोले, विक्रम, तू जवान हो गया है, अब तू हमसे दूर भागने की सोचने लग गया है ? पापा ने विक्रम का हाथ पकड़ा और वापस घर की ओर चल दिए।

दिशाहीन, निर्णयहीन जवान लड़कों की जिन्दगी में कम से कम एक मौका जरूर आता है जब वे घर से बाहर भागने की सोचते हैं। कई भाग जाते हैं, पर ज्यादातर नहीं भागते, क्योंकि वे सोचते हैं, आखिर यह गलती कहाँ हुई? आज के माँ–बाप अगर ग्रेजुएशन से पहले ही अपने जवान लड़कों को व्यापार की शैली का ज्ञान करवा दें तो इस तरह की घटनाएँ होना शायद कम हो जायें।

किशोरों की ठोस नींव के भूमि–पूजन का समय क्या है?
What is the time for solid foundation of young student?

किशोरों के केरियर का समय 10वीं और 12वीं कक्षा के परिणामों से पहले का होता है। यह किशोर के जीवन का वह समय है जब ठोस नींव का आधार बनाया जाता है। 10वीं कक्षा के बाद केरियर का भूमि–पूजन हो जाता है। वहीं 12वीं करते ही एक नक्शा तय करके उसकी ठोस बुनियाद रख कर इमारत खड़ी करने का काम शुरू हो जाता है। यह समय ऐसा होता है जब किसी भी मार्गदर्शक की आवश्यकता सर्वाधिक होती है।

जीवन को अपने इशारे पर चलाने और सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आज का युवा कटिबद्ध है। उसे चाहिए श्रीकृष्ण जैसा मार्गदर्शक, अन्यथा परिणाम शून्य ही रहेगा। कितने युवक–युवतियाँ इस दौड़ में हिस्सा ले पाते हैं, कितने बीच में पिछड़ जाते हैं, और कितने कम अर्जुन की आँख की भाँति सही जगह निशाना साध पाते हैं, लगा पाते हैं, जिसका मुख्य कारण है मार्गदर्शक की कमी, सही मार्गदर्शक का अभाव। युवा की आँख (अर्जुन की आँख) का लक्ष्य किस तरफ है? क्या लक्ष्य तथा दिशा स्पष्ट है? हर शिक्षा कुरुक्षेत्र का रण–मैदान है—बस, जरूरत है तो अच्छे माँ–बाप और शिक्षक की, जो युवा विद्यार्थियों की समस्या को सुलझावें, ना कि उनको इकट्ठा करें। आज हर युवक और युवती द्वारा अपना उद्देश्य निर्धारित करके नियमित काम शुरू कर देना ही अमीरी और सफलता की तरफ दिशा देना होता है। संकल्प मन में होता है—ढिंढ़ोरा पीटने में नहीं। कुछ इनसान बरसात में नहाते हैं, परन्तु कुछ भीगते ही हैं। यह नहाने और भीगने का फर्क सिर्फ मार्गदर्शक की कमी के कारण ही है। गुलाब में काँटे जरूर होते हैं, लेकिन गुलाबी रंग के आकर्षण से भी कोई युवा बच नहीं सकता। आकर्षण बनाए रखने के अपने–अपने तरीके होते हैं और वही तरीके आगे जाकर कामयाबी दिलाते हैं। जीवन को सहज बना देने वाली व्यापार हाइटेक शैली ने युवाओं के सामने व्यापार के सुनहरे अवसरों का दरवाजा खोल दिया है। युवाओं को मुनाफा कमाने के लिए कोई निमंत्रण नहीं देगा, बल्कि उसका निमंत्रण अपने–आप से लेना सीखना होगा।

अक्ल और अमीरी की कोई सीमा नहीं होती।

— डॉ. राम बजाज

लक्ष्मी मित्तल—दुनिया का तीसरा सबसे अमीर आदमी

भारतीय मूल के ब्रितानी इस्पात उद्योगपति लक्ष्मी मित्तल (54 वर्ष) दुनिया के सबसे बड़े इस्पात समूह के मालिक हैं, जिनकी सम्पत्ति 25 अरब डालर आँकी गई है। इसी सूची में माइक्रोसॉफ्ट प्रमुख अमेरिका के बिल गेट्स 46.5 अरब डालर से पहले तथा वारेन बूफे इन्वेस्टमेन्ट गुरु को 44 अरब डालर के साथ दूसरे स्थान पर फोर्ब्स सूची में दिखाया गया है।

लक्ष्मी मित्तल का जन्म 15 जून, 1950 को सादुलशहर (चूरू) राजस्थान, भारत में हुआ था। कोलकाता के सेंट जेवियर कालेज में पढ़ाई की। पढ़ाई के

साथ ही कारोबारी गुर भी उनके पिता मोहनलाल मित्तल ने अपनी छोटी इस्पात कम्पनी से सिखलाए। 1970 में लक्ष्मी मित्तल ने कोलकाता और बंगलूर में इस्पात संयंत्र लगाये। 1976 में इंडोनेशिया में इस्पात इंडो कम्पनी शुरू की। लेकिन सफलता की कहानी 1983 से त्रिनिदाद–टोबेगो से शुरू हुई। मित्तल समूह की एलएनएम होल्डिंग्स व इस्पात इंटरनेशनल 20 देशों में फैली है और 11 देशों में इसे और फैलाने की योजना है। सफलता का राज, छोटे संयंत्रों से लगाव व पिता की सीख—जिस दिन आप हाइ प्रोफाइल हुए—समझिए, आपका पतन शुरू हो गया। पढ़ाई के साथ–साथ माँ–बाप से कारोबारी गुर सीखना ही उनकी जिन्दगी की सफलता का राज है।

युवाओं के भविष्य की नींव क्या है?
What is the future foundation of youth?

नजर का पैनापन, तीक्ष्ण बुद्धि ही आज के युवाओं को श्रेष्ठता की ओर ले जाते हैं, जो अमीरी के रास्ते होते हैं। इस संसार और सृष्टि में सभी तत्त्व विद्यमान हैं। गरीबी और अमीरी भी उनमें से एक तत्त्व है। सोना–चाँदी, मोती और दाना–तिनका चारों ओर बिखरा पड़ा है। बस, चुगने वाला नवयुवक चाहे हंस बन कर मोती चुग ले या फिर कौआ बन कर दाने–तिनके से संतोष कर गरीबी को चुन ले और भगवान् को कोसता रहे।

तीक्ष्ण बुद्धि ही श्रेष्ठता की ओर ले जाती है। जिसे गरीबी से आगे बढ़ना है, उसे सृष्टि की रचना के सिर्फ श्रेष्ठ तत्त्व ही आकर्षित करते हैं। अर्जुन की नजर के समान जो पेड़–पत्ते और अन्य चीजों को लक्ष्य के सामने नगण्य समझ कर अनदेखी कर देता है। नजर लक्ष्य को देखती है और कुछ नहीं। बस, चिड़िया की आँख और सिर्फ आँख ही उसे नजर आती है। अमीरी की रचना का अभाव सबसे पहले स्वयं युवाओं के मन में होता है। नजर के अनुसार ही अमीरी का स्वाद चखने को मिलता है। नजरिये के अनुसार ही सभी को दुनिया दिखती है। जैसा नौजवान चाहेगा—वैसी ही संगति मिलेगी और यही होगी उसके भविष्य की नींव (Future Foundation)। मन में अमीरी के कई विचार उठते हैं। आँखें अमीरी के उन्हीं विचारों को मूर्त रूप में देखना चाहती हैं। युवा अपने लक्ष्य व प्लान बनाते हैं। परिश्रम से लक्ष्य को आकार देते हैं और अमीरी का रास्ता अपनी पसंद के अनुसार छाँट लेते हैं।

संसार की खूबियों को समझना नवयुवकों के लिए थोड़ा मुश्किल हो सकता है, परन्तु उनके लिए मुमकिन है—कठिन हरगिज नहीं है। खूबियों के जरिये अमीरी को खोजना और साकार करना आसान हो जाता है, यदि नजर में अमीरी का ईमानदारी के साथ सकारात्मक बदलाव लावे तो। आपको दोस्त बनाना है तो स्वयं भी दोस्त बनना होगा। लाखों पानी की बूंदें सागर में गिरती हैं और खारे पानी में मिलकर गुम हो जाती हैं। दूसरी ओर वही बूंद अगर सीप में गिर जावे तो वह मोती की शक्ल अख्तियार करती है। मोती बनाने के लिए सीप जैसी ढूँढ़ने वाली नजर चाहिए।

कभी–कभी जो हमें अचानक दिख जाता है
वह सफलता का रास्ता भी हो सकता है।

—डा. राम बजाज

मेहनत और भाग्य के बीच का अनुपात 70 : 30 का है।

—डा. राम बजाज

अशोक महान् और नौजवान मेहनती किसान का चमत्कार

सैर पर निकले राजा अशोक महान् ने एक किसान का खूब हरा–भरा खेत देखा, जिसमें सिंचाई के लिए दो पहाड़ों की टुकड़ियों के बीच बाँध, घास, कटाई व आटा पीसने के लिए पवन चक्की देख कर अपने ज्योतिषी से कहा, इस किसान के घर कितनी खुशहाली है! क्यों न इस भाग्यशाली इनसान का हाथ देख कर पता किया जाए कि इसके भाग्य की रेखा कितनी लम्बी है?

राजा ने खेत में खड़े बूढ़े किसान को बुलवा लिया और ज्योतिषी से हाथ देखने को कहा। ज्योतिषी ने हाथ देखा और राजा से बोला, महाराज, इस किसान की भाग्य की रेखा की लम्बाई लगभग आपके भाग्य की रेखा के बराबर ही नजर आ रही है।

यह सुन कर किसान हँस पड़ा और जोर से बोला, राजा साहब, यह खेत मेरे पड़ोसी नौजवान का है जो सामने आ रहा है। मैं गरीब किसान तो यहाँ अपने सूखे बंजर खेतों को हरा–भरा बनाने के लिए कुछ उपाय समझने इस नवयुवक के पास आया हूँ। ज्योतिषी महोदय, आप कहीं गलती कर रहे हैं।

तब तक खेत का मालिक राजा अशोक के पास पहुँच चुका था। राजा अशोक ने उसे ज्योतिषी को हाथ दिखाने को कहा, तो उसने अपना उलटा हाथ सामने रख दिया। यह देख ज्योतिषी ने क्रोधित होकर कहा, अरे, मूर्ख इतना भी नहीं जानते कि रेखाएँ हथेलियों पर होती हैं? हाथ सीधा करो।

यह सुन कर खेत का मालिक वह नौजवान हँस पड़ा और हाथ को सीधा करते हुए बोला, ज्योतिषीजी आप हाथ की रेखाएँ जरूर देखिए, परन्तु अगर ये भाग्य-रेखाएँ साथ छोड़ दे, समय विपरीत साबित हो तो अक्ल, लगन-लक्ष्य और मेहनत ऐसी रेखाएँ हैं, जो भाग्य-रेखाओं को अपने-आप अपनी ओर खींच लायेगी। इसका जीता-जागता सुबूत है मेरा खेत। मैं मनुष्य के पुरुषार्थ, उसकी लगन, मेहनत, अक्ल पर भरोसा करता हूँ और इसी के कारण खुशहाल और अमीर किसान हूँ। राजा अशोक नौजवान किसान की बात सुन कर हक्का-बक्का रह गया। उन्होंने ज्योतिषी को राज-दरबार से छुट्टी दे दी और नौजवान को अपने देश की प्रगति के लिए नए-नए उपायों की जानकारी के साथ परामर्शदाता बना दिया।

मानव और भगवान् में अन्तर Difference between human & God

मानव और भगवान् में अन्तर यह है कि भगवान् बिना शर्त काम करता है जबकि मानव सारे काम शर्त से करता है। व्रत वह जो काम को सिद्धि मान कर चलता है, यानी मेरा काम हो जावे तो मैं इक्कीस सोमवार के व्रत करूँगा अथवा सवामणी का भोग लगा कर प्रसाद करूंगा। मेरा यह काम सिद्ध हो जावे तो मैं हरिद्वार तीर्थस्थल पर या बद्रीनाथ, केदारनाथ अथवा पूनरासर के बाबा भगवान् हनुमानजी के दर्शन कर प्रसाद का भोग लगाऊँगा। ईश्वर के साथ हम शर्तों को जोड़ते हैं। परन्तु ईश्वर अपने किसी भी काम में शर्त नहीं जोड़ता। वह कभी नहीं कहता कि तुम मेरे एक हजार एक जाप सालासर हनुमानजी के करवाओगे तो मैं तुम्हें एक बेटा दूँगा। अथवा मैं (ईश्वर) तब तुम पर धन की वर्षा करूँगा जब तुम मुझे दूध-दही से स्नान करवाओ। यही अन्तर मानव और भगवान् में होता है। वह निःस्वार्थ से सारे काम करता रहता है। चाहे धूप किसी को देना अथवा बारिश किसी को देना।

कल्पना करिए की यदि सारे नियम–कायदों का संचालन मानव के अपने हाथ में हो तो एक–दूसरे की वह हवा–पानी रोक देता! उसको साँस भी लेने नहीं देता। स्वयं तो धूप ले लेता, परन्तु पड़ोसी को अंधेरे में धकेल देता। इसलिए ईश्वर ने संचालन के लिए चाँद, सूरज, हवा, पानी के नियम व हिसाब को अपने पास रखा है। लेकिन याद रहे, साथ में भगवान् ने मनुष्य को इतनी शक्ति व दिमाग अवश्य ही दिया है कि वह उनका उपयोग करे और मानव–समाज के हित के लिए करे, ना कि अहित के लिए। मनुष्य फिर भी भगवान् के काम में बाधा डालता है—वह अपने हर काम में शर्त, प्रार्थना, पूजा–अर्चना अथवा तिरुपति बालाजी मन्दिर में मन्नतें माँगता है कि खास कार्य सिद्ध होने पर मुण्डन के साथ 56 भोग (छप्पन भोग) का प्रसाद चढ़ाऊँगा अथवा गिरिराज के पूजनीय स्थान पर 101 दण्डवत का प्रणय लगाऊँगा।

कहते हैं कि मुट्ठी में रेत नहीं रुकती लेकिन समय रहते अगर मुट्ठियों को ठीक ढंग से बन्द कर लिया जाए तो बहुत–कुछ रेत बचायी जा सकती है।

नवयुवकों को भगवान् के आगे शर्तों के साथ अंधेरी सुरंग में भटकने की बजाय बेहतर है कि समय रहते ही वे एक लक्ष्य निर्धारित कर लें। एक ऐसा लक्ष्य, जो आपको अमीरी की सफलता की ऊँची उड़ान भरवा सके। लेकिन इसके लिए जरूरी है सही निर्णय की, सही राहें चुनने की, जिससे आगे चल कर युवाओं को अच्छी तरह विचार कर लेना चाहिए कि लक्ष्यपूर्ति के लिए आवश्यक योग्यता, मेहनत करने की शक्ति और पूर्ण–सम्पूर्ण करने की ठोस भावना आपके अन्दर है भी या नहीं। इस ठोस भावना का संचार 10वीं और 12वीं कक्षा पास करने से पहले निश्चित लक्ष्य के साथ जरूर बना लेवें।

वास्तव में वही आदमी सफल होता है
जो लकीर का फकीर नहीं होता।

—डा. राम बजाज

नेक काम का तरीका बदलना होगा—नवयुवको!

लोग क्या कहेंगे—दूसरे तुम्हारा क्या मूल्यांकन करते हैं, यह उतना जरूरी नहीं है, बल्कि महत्त्वपूर्ण यह है कि तुम स्वयं को कितना महत्त्वपूर्ण मानते हो, क्योंकि भगवान् सबको बराबर देखता है। क्या तुक है कि एक सौ एक रुपए के घी की ज्योति लगवा कर, जला कर मन्दिर में रख दिया, जहाँ पहले से ही कितने बर्तनों में ज्योति जल रही थी। आपके लिए भी नेक काम की परिभाषा कहीं यही तो

नहीं है? कहीं आप भी तो भगवान् को एक सौ एक रूपए का प्रसाद चढ़ाकर, पीर पर चादर चढ़ा देने–भर से ही तो अपने–आपको धन्य नहीं समझते? अगर सच मुच ऐसा है तो अपने नेक काम के तरीके को नया रूप देना होगा, परिभाषा को नए ढंग से परिभाषित करना होगा। पूजा के लिए प्रसाद या पूजन की सामग्री की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन यह इतना अधिक भी न हो कि फिर इसकी महत्ता ही नहीं रहे। जरूरत है तो अपने कदमों की दिशा बदलने की। भगवान् तो श्रद्धापूर्वक जलाए गये एक छोटे–से दीपक से भी खुश हो जावेंगे। बचे हुए रुपये से जरूरतमन्द के लिए धन खर्च करके आप भगवान् को बेहद नजदीक पाएंगे। भगवान् को करीब लाने का यह नुस्खा अपनाकर देखिए। कोई भी इनसान चाहे किसी भी क्षेत्र में कितनी ही प्रगति क्यों नहीं कर ले, वह अनुशासन और दायरे के अन्दर रहे बिना सही मायने में उन्नति नहीं कर सकता। अनुशासन ऊपर से थोपने से लागू नहीं किया जा सकता है, जरूरत है इसे खुद अपनाकर, बाद में दूसरे पर किए जाने की। परन्तु नेक काम की परिभाषा में गुरु ग्रन्थ साहिब का अपना अलग स्थान है।

दादी–माँ, गुरु ग्रन्थ साहिब और पोता

पोता : दादी–माँ, हम सब गुरु ग्रन्थ साहिब के समक्ष शीश क्यों नवाते हैं?

दादी–माँ : क्योंकि गुरु ग्रन्थ साहिबजी हमारे लिए गुरु के स्वरूप हैं। हम इनके लिए नमन करते हैं।

पोता : दादी–माँ, कल हमारे धार्मिक शिक्षा के टीचर हमसे पूछ रहे थे कि मान लो कि कोई बड़ा धार्मिक लेखक इतना बड़ा ग्रन्थ बना दे, पर उसमें गुरुवाणी न हो तो भी क्या हम उसे नमन करेंगे?

दादी–माँ : नहीं बेटा, गुरु की वाणी ही इनसान की सच्ची मार्गदर्शक होती है, अतः हम गुरु के वचनों को ही शीश नवाते हैं, केवल आकार को नहीं। भले ही, लिखने वाला लेखक कितना ही महँगा और धार्मिक भी क्यों ना हो।

भगवान् ने बुद्धि की कोई सीमा निर्धारित नहीं की है।

—डा. राम बजाज

रुपया–पैसा और भाग्य साथ छोड़ दें तो?

रुपये–पैसे किसी पेड़ पर पत्तों की तरह नहीं उगते और उन्हें बनाया भी नहीं जा सकता। ना ही रुपयों की नकल की जा सकती है। दौलत सिर्फ कमाई जा सकती है या तो मेहनत से या फिर अक्लमन्दी के हुनर से।

विद्या और अक्ल इनसान की ऐसी बेशकीमती दौलत है कि जब भाग्य साथ छोड़ दे, कर्म बेअसर हो जाएँ और समय विपरीत साबित हो तो ऐसे में विद्या और अक्ल ही इन कठिन परिस्थितियों में हमारा साथ निभाती हैं।

इतना तो तय है कि जीवन में रुपया–पैसा, धन–दौलत ही सब–कुछ नहीं है, लेकिन यह भी सच है कि धन की शक्ति को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह भी तय है कि जीवन की गति रुपये–पैसों से रुक नहीं सकती है, लेकिन यह भी सच है कि जीवन को चलाने के लिए दौलत रूपी ईंधन की हर इनसान को जरूरत पड़ती है। अतः पैरों के नीचे जो जल रहा है उसे बुझाने की कोशिश कीजिए। परन्तु जो बुझ चुका है, उसकी राख न उड़ाएँ। अतीत बीत गया है, भविष्य कैसा होगा, यह वर्तमान बताएगा, इसलिए युवा उसे संवारने में जुट जाएँ। युवा याद रखें कि किसी भी कलाकार का जन्म उसकी बुलन्दियों के लिए होता है और कला उसकी रगों में बसती है।

चाँद छूने की हसरत की कीमत इतनी नहीं होनी चाहिए कि अंधेरे में सारा जीवन ही गुम हो जाए। यह सवाल अगर आज के नौजवानों से पूछा जाये तो उनका शायद यही जवाब होगा कि हमें जिन्दगी में अवसर मिले ही नहीं। अवसर प्रत्येक इनसान की जिन्दगी में आते हैं और इतनी धीमी आवाज के साथ आते हैं कि हर नौजवान उनकी आहट सुन ही नहीं पाता। जो सुन लेता है, बस, उसे हसरत की कीमत नहीं चुकानी पड़ती, बल्कि कीमत अदा कर लेता है। अहम सवाल यह नहीं है कि आज का नवयुवक इनसान भटक कहाँ गया है, बल्कि यह है कि उसे दिशा दिखाने वाला मार्गदर्शक 99.9999 प्रतिशत मिलता ही नहीं है और कोई मिल भी जाए तो हालात के सामने हार मान लेता है।

नवयुवक का मार्गदर्शक घोड़ा ही है।

▣ *कुछ लोगों ने एक नवयुवक किसान से पूछा, तुम घोड़े पर बैठ कर कहाँ जा रहे हो?*

गाँव की तरफ। —हताश किसान नवयुवक का जवाब था।

पर गाँव तो पीछे रह गया, तुमने गलत रास्ता पकड़ लिया है।

मैं जानता हूँ, नवयुवक बोला, पर घोड़े को तंग करने से क्या फायदा, कम से कम यह चल तो रहा है, वरना मोड़ने के प्रयास से यह चलना ही बन्द कर देगा।

गाँव के लोग नवयुवक के मुँह की तरफ देखते ही रह गए। दिलचस्प बात यह है कि इस तरह का विचार नवयुवकों में तब आता है, जब वे रास्ता भटक चुके होते हैं, अगर मंजिल दिखाने वाला मिल भी जाये तो भी उसी हाल में जीने के लिए निकल पड़ते हैं, भले ही रास्ता गलत दिशा में ही जा रहा हो।

युवाओं के उलझे संसार के उपाय क्या हैं?

20 साल की उम्र के आस–पास का समय घोर अंधकारमय हो सकता है, अगर ....

शिक्षा पूरी होते ही जब किशोरों के बाहर की दुनिया में कदम रखने का समय आता है तो अकसर वे घोर अंधेरा ही पाते हैं जिसमें रोशनी की आवश्यकता इसलिए पड़ती है कि उन्हें सही रास्ता दिखाने वाले माँ–बाप या मार्गदर्शक का अता–पता नहीं होता। दरअसल यह वक्त होता है जब उन्हें केरियर बनाना, परिवार की जिम्मेदारियाँ उठाना, समाज की पहचान के अलावा नए रिश्ते, जिसमें शादी एक आम मसला होती है, का भी चुनाव करना होता है। यह परीक्षा की घड़ी होती है, जहाँ पर जीवनरूपी संघर्ष की शतरंज की बाजी को खुल कर खेलना है। शतरंज की दुनिया में आप ऐसी दुनिया के स्वामी होते हैं, जहाँ मोहरे आपकी मरजी के मुताबिक चलते हैं। जीते हुए आदमी के लिए यह एक सुखद अनुभव होता है। शतरंज के खेल में भाग्य नाम की कोई चीज नहीं होती, इसमें आप अच्छा खेलते हैं तो जीतते हैं और यही नियम जिन्दगी के हर स्तर पर लागू होता है, जिसमें युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए तो चालों को समझना ही अहम मुद्दा होता है—परन्तु अकसर इस उम्र में वे भटक जाते हैं जिसके लिए कच्ची उम्र में ही उनको दिशाज्ञान की आवश्यकता पड़ती है—जहाँ 99.9999 फीसदी मार्गदर्शक माँ–बाप इस दिशा से अनभिज्ञ रहते हैं और गरीब बने रहते हैं।

अलग–अलग दिशाएँ/जल्दबाजी ठीक नहीं

बारहवीं उत्तीर्ण करने के बाद कोई भी छात्र–छात्रा एक ऐसे चौराहे पर खड़ा होता है, जिसके चारों ओर अलग–अलग दिशाएँ होती हैं, रास्ते भी अलग–अलग होते हैं। इस बहुदिशाओं वाले रास्ते में किसी भी छात्र–छात्रा को बहुत सोच–समझ कर ही कोई एक रास्ता चुनना होता है, क्योंकि यह निर्णय उस छात्र–छात्रा के भविष्य से सीधा जुड़ा होता है। केरियर चुनने का निर्णय बहुत महत्त्वपूर्ण इसलिए भी हो जाता है क्योंकि एक तो सही रास्ता किसी भी विद्यार्थी के जीवन को नया और निर्णायक मोड़ देता है, दूसरे, एक बार रास्ता चुन लेने के पश्चात् उससे वापस लौटना काफी मुश्किल होता है। इस कारण रास्ते के चयन में जल्दी कतई नहीं दिखानी चाहिए। सोच–समझ कर फैसला करने से ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त होता है, जो एक विद्यार्थी को उसकी मनचाही मंजिल तक ले जाता है। इस केरियर चयन का मामला और प्राथमिकता, 8वीं क्लास तक आते–आते, तय करना शुरू कर दें, ताकि अगर कहीं दूसरा रास्ता चुनना भी पड़े तो एक बार किए गए फैसले पर पुनर्विचार का समय मिल जाता है। हर विद्यार्थी को एक साफ–सुथरा रास्ता तय करना होता है, जहाँ से मंजिल पार करने के लिए 12वीं क्लास तक आते–आते उस चौराहे पर खड़ा हो जाता है, जिसमें से एक रास्ता उसका पहले से ही चुना जा चुका होता है।

केरियर की दिशा बहुत हद तक 8वीं क्लास के बाद ही तय हो जाती है, जब कोई छात्र अपनी रुचि और प्रतिभा के अनुसार विज्ञान, वाणिज्य या कला विषय का चयन कर लेता है। किसी भी छात्र–छात्रा को अपनी रुचि, अपने अंकों और अपनी प्रतिभा के आधार पर ठंडे दिमाग से माँ–बाप की सलाह से भावी केरियर का निर्णय करना चाहिए। केरियर चुनते समय देखा–देखी कभी नहीं करनी चाहिए। ऐसा नहीं कि फलाँ ने (IIT) आई.आई.टी. के लिए कोचिंग क्लास में दाखिला लिया है तो हम भी उसी में ले लेते हैं। यह भी नहीं भूलना चाहिए कि सभी की स्थितियाँ अलग–अलग होती हैं। भविष्य की योजना अलग–अलग होती है। आजकल कालेज की पढ़ाई कम और व्यावसायिक कोर्स ज्यादा उपयोगी हो रहे हैं।

आपके बच्चे का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि उसकी अवसरों को पकड़ने की कला व

निर्णय लेने की क्षमता में कितनी गहराई है।

— डा. राम बजाज

उपाय और पार–पाना आसान

(1) किशोर की प्राथमिकताएँ आठवीं क्लास तक आते–आते तय कर दें और उसे खुद पर यकीन करना सिखलाएँ।

(2) आठवीं क्लास से ही बड़े सपने और बड़े लक्ष्य का पाठ पढ़ाना शुरू करें।

(3) जितना बड़ा लक्ष्य होगा, उसकी प्राप्ति के लिए सपने भी उतने ही बड़े होंगे।

(4) किशोर का मूल्य दूसरों के मापदण्ड़ों पर आधारित नहीं होता, उसकी योग्यता का मापदण्ड उसके स्वयं के आधार पर होता है।

(5) सिर्फ उद्योग और व्यापार के बारे में ही बात करें, नौकरी के बारे में नहीं।

(6) दसवीं क्लास से ही किशोर के केरियर की ठोस नींव का समय होता है—जिस रास्ते पर जाना है, उसका खुले दिमाग में नक्शा बना लेवें और साथ ही उस नक्शे पर ही छोटे–छोटे कार्य करवाना आरम्भ करवा देवें।

(7) किशोर को केरियर के चयन के बारे में जितना आप उससे विचार–विमर्श करेंगे उतने ही अधिक आइडिया उसके दिमाग में आयेंगे और उतना ही अधिक वह व्यापार की तलाश में भीड़ से बहुत आगे निकल जाएगा। याद रखें, व्यापार में सोच का नयापन जबरदस्त कामयाबी दिला सकता है।

विचार क्रिया का पिता है।

Idea is the the father of action.

(8) बच्चे की आत्मनिर्भरता की पहली सीढ़ी है—अपना काम खुद करना सीखे।

(9) दसवीं क्लास के बाद जब किशोर के केरियर का ब्ल्यू प्रिन्ट बन गया तो बारहवीं क्लास तक आते–आते, उस इमारत की बुनियाद का ठोस आधार तैयार करना पड़ता है।

(10) और जब बारहवीं कक्षा पास करते ही इस ठोस आधार पर ठोस नींव की बनावट शुरू हो जाती है, तब तक केरियर की दिशा का अन्तिम निर्णय लिया जाना अतिआवश्यक होकर इमारत बनाने का काम शुरू हो जाना चाहिए। यानी कि किस व्यापार की ओर अन्तिम कदमों को आगे बढ़ाना होगा। फिर याद रखें कि किशोर को नौकरी कतई नहीं करानी है। यह समय ऐसा है, जब किसी भी मार्गदर्शक माँ–बाप की आवश्यकता सर्वाधिक होती है। यहाँ व्यापार–क्षेत्र के चुनाव की एकमात्र चूक आपके किशोर की ऊँची उड़ान की दिशा बदल सकती है। **युद्ध हिम्मत और आत्मविश्वास से जीते जाते हैं, हथियारों से नहीं।** विश्वास करिए—आप का किशोर भी चाहे तो आसमान की ऊँची से ऊँची उड़ान भर सकता है। याद रखें, कामयाब और अमीर वही होते हैं जिनकी लोग कल्पना नहीं कर सकते। विजेता वही होता है जो कुछ खास होता है। खास वही होता है जो हिम्मती होता है, जो कुछ नया करने की हिम्मत रखता है। बच्चों को नए काम–धन्धे की शुरुआत कराना, समझो, आधा काम निबटा दिया। अगर नए व्यापार की शुरुआत कर दी तो आधा काम तो हो गया—बाकी आधे काम के लिए, किशोर को सारी मेहनत और परिश्रम करना पड़ेगा—लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए। अपने बच्चे के सामर्थ्य को पहचानिए, ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका उसके पास में हल नहीं हो। निर्णय के साथ जो काम हाथ में ले लिया, उसे पूरे विश्वास के साथ शुरू करवा दीजिए। फिर देखिए कि सफलता आपके किशोर के पैर चूमती नजर आयेगी। इस दुनिया में मछली ही एक ऐसा प्राणी है जो कभी भी अपनी आँख बन्द नहीं करती। अगर उसके छोटे बच्चे हैं तो वह हमेशा उनके पीछे चलती है। 99.9999 प्रतिशत माँ–बाप इस बात को भूल कर आँखों को मूँद लेते हैं और बच्चों को अकसर यही कहते रहते हैं, **अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।** बस, यही चूक इन किशोरों को धरातल पर ला पटकती है, जिनका अन्त बड़ा दर्दनाक होता है।

(11) अन्त में ग्रेजुएशन या पोस्ट–ग्रेजुएशन के बाद नवयुवक सम्पूर्ण रूप से व्यावसायिक सम्बन्धों का सामना बड़ी हिम्मत और धैर्य के साथ

करना सीख चुका होता है। अब व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या, सत्ता और उसके अहम खेल उसे अचंभित नहीं कर सकते। इस उम्र तक आते ही युवा नकारात्मक पहलू को नकारता हुआ अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरी करने के लिए कुछ भी करने की बजाए निश्चित व्यापार करने की दिशा में ठोस शुरुआत कर देता है। अब युवा किशोर किसी सिस्टम का गुलाम नहीं रह कर अपने नए जमाने के सिस्टम के अनुसार व्यावसायिक कार्य आरम्भ कर देता है। पुराने व्यापार के नियमों में कामयाबी का शार्टकट (shortcut) नहीं होता था। परन्तु आज के इनसान के लिए कामयाबी का भी शार्टकट है, परन्तु आवश्यकता है कुशल प्रबन्धन के उन नियमों को जानने की, जिनमें समय–प्रबन्धन के नियमों को व्यवहार में लाकर विशेषज्ञों की सेवाओं द्वारा कामयाबी को शार्टकट (shortcut) द्वारा अर्जित किया जा सकता है। इस शार्टकट के एकसूत्रीय फार्मूले के समीकरण (Equation) को Balance करने के लिए कठोर दिमागी परिश्रम, लगन व पुराने अनुभवों के मिश्रण को मिलाने की आवश्यकता होती है जो सफलता व अमीरी के द्वार तक अपने–आप पहुँचा देती है।

खुद को नहीं, अध्ययन को गंभीरता से लें।

—डा. राम बजाज

गुरुत्वाकर्षण शक्ति क्या है? What is Graviational Force?

कोचिंग क्लासेज में साल–दो साल बरबाद क्यों?

वैज्ञानिक न्यूटन के अनुसार गुरुत्वाकर्षण शक्ति वह शक्ति है जब दो पदार्थ अपने Mass के अनुसार आपस में एक–दूसरे की तरफ आकर्षित होते हैं तब यह आकर्षणशक्ति, वस्तु के आकार के हिसाब से कम या ज्यादा होती है। चूँकि पृथ्वी का Mass बहुत बड़ा है, इसलिए गुरुत्वाकर्षण शक्ति भी इसमें ज्यादा होती है। पृथ्वी व सभी पदार्थ अपने केन्द्रबिन्दु (Centre of Gravity) की तरफ ही आकर्षित होते हैं। पृथ्वी की आकर्षणशक्ति से चाँद की आकर्षणशक्ति 1/6 भाग ही होती है। अकसर नवयुवक कोचिंग क्लासेज की तरफ आकर्षित होकर अपने आकर्षण की शक्ति को कम कर लेते हैं। कोई भी निर्णय, शिक्षा, रहन–सहन, सभी–कुछ कोचिंग संस्थान के

निर्देशानुसार कार्य करने लग जाते हैं। चूँकि इन कोचिंग संस्थानों का रिजल्ट 99.9999 प्रतिशत नवयुवकों के हक में नहीं जाता, तब वे घोर अंधेरा ही पाते हैं। एक बार उन्हीं कक्षाओं की परीक्षा दोबारा देने की कोशिश में फिर असफलता ही हाथ लगती है जिसका अन्त घोर निराशापूर्ण अध्याय से शुरू होने लगता है।

जैसे ही बोर्ड या यूनिवर्सिटी की परीक्षा होती है—विद्यार्थी अपने लक्ष्य की तलाश में इधर–उधर भटकते नजर आने लगते हैं। आखिर बच्चों को कोचिंग शिक्षण के लिए अपने शहर, गाँव को छोड़ कर बाहर कहाँ और किस जगह भेजा जावे, इस तथ्य को लेकर माँ–बाप की परेशानी साफ दिखाई देने लगती है। आज के शिक्षार्थी इस बात को भली–भाँति जानते हैं कि इन प्रतियोगी परीक्षाओं में कितने भी अच्छे कोचिंग संस्थानों में दाखिला ले लें, लेकिन प्रथम और आखिरी प्रयास तो शिक्षार्थी को स्वयं ही करना पड़ेगा। कोई भी कोचिंग क्लास, कितनी भी नामी–गिरामी क्यों ना हो, प्रयत्न, प्रयास और मेहनत स्वयं की होती है। सभी कोचिंग संस्थानों के अपने–अपने दावे हैं। लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं है। **किसी भी परीक्षा का आधार एक ही है—इसके लिए सही किताबें, सही सलाह और सही लगन होनी चाहिए।** सही परामर्श देने वाला आपके शहर में भी अच्छा मिल सकता है, जिससे आपका समय भी बरबाद न हो और सही अध्ययन के लिए काफी समय मिल सके। क्या किसी संस्थान का परीक्षा–परिणाम शत–प्रतिशत रहा है? क्या किसी भी संस्थान ने द्वितीय ग्रेड के विद्यार्थियों को अध्ययन करवा कर उनके परिणाम उनके हक में करवाए हैं? इन कोचिंग संस्थानों में वे ही विद्यार्थी अध्ययनरत होते हैं—जिनका किताबी ज्ञान और अंकों का प्रतिशत अन्य साधारण विद्यार्थियों के अंकों से कहीं अधिक होता है तथा इन कोचिंग संस्थानों में सफल प्रतियोगियों की संख्या भी 0.0001 प्रतिशत से अधिक नहीं होती। फिर बतलाएँ कि बाकी के विद्यार्थियों के भविष्य का क्या होगा?

माँ–बाप, कृपया इस तथ्य को भली प्रकार से जान लेवें और बच्चों को 8वीं क्लास से ही सही दिशा व सही मार्ग का ज्ञान देवें।

डिनर के लिए बिगुल

▣ *एक बार की बात है, दो बड़े पहाड़ों की अलग–अलग चोटियों पर एक–एक महल था। एक समझदार कुत्ता जमीन सूँघता हुआ भोजन*

की तलाश में महल की तरफ दौड़ रहा था। अचानक एक महल से डिनर का बिगुल बजा। कुत्ता तत्काल उस पहाड़ की तरफ दौड़ा ताकि भोजन मिल जावे। वह आधी दूर ही जा पाया था कि बिगुल बन्द हो गया और दूसरे महल का बिगुल बजने लगा। कुत्ते ने सोचा, जब तक मैं इस पहाड़ पर चढूँगा, तब तक वे लोग खाना खत्म कर देंगे, जबकि दूसरे महल में तो खाना अभी शुरू ही हुआ है।

इसलिए वह पहली पहाड़ से उतरा और दूसरे पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। तभी अचानक बिगुल बंद हो गया और पहले महल का बिगुल फिर से बजने लगा। कुत्ता फिर से पलटा और एक बार फिर पहले पहाड़ पर चढ़ने लगा। वह कई बार इस पहाड़ से उस पहाड़ तक गया, परन्तु महल के किसी दरवाजे तक पहुँच नहीं सका। अन्त में दोनों महलों में खाना खत्म हो गया और दरवाजे बन्द कर दिए गए। बार–बार परीक्षाओं में अच्छे नम्बरों की कोशिश में दुबारा प्रयास करना, दुबारा, तिबारा, असफलता ही हाथ लगती है, जिसका खाना खत्म और दरवाजे बन्द के अलावा और कोई निष्कर्ष नहीं निकलता। अन्त में भूखे के भूखे ही रहना पड़ता है।

क्या आप एक ऐसे सर्वश्रेष्ठ साइकल चालक की कल्पना कर सकते हैं जो दो साइकलों पर सवार होकर रेस जीतना चाहता है? भले ही उसके पास दुनिया की सर्वश्रेष्ठ साइकल हो, तो भी वह दौड़ शुरू ही नहीं कर पायेगा।

सफलता का फार्मूला यह नहीं है

99.9999 प्रतिशत इनसान मानते हैं कि जिन्दगी में सफलता का फार्मूला अच्छी पढ़ाई करना और प्रोफेशनल बनना है। किसी बड़ी कम्पनी में नौकरी ढूँढ़ना और रिटायर होने तक वहीं बने रहना। हम सभी इस नजरिये से अच्छी तरह वाकिफ हैं। ज्यादातर परिवार इसी तरीके से सोचते हैं। आज के जमाने में और अमीर बनने के लिए यह फार्मूला फायदे का नहीं, घाटे का सौदा है। नौकरी के नजरिए वाले लोग अपनी इच्छाओं और जरूरतों को अपनी आमदनी के हिसाब से कम–ज्यादा करते रहते हैं। हर तनख्वाह के बाद अगले महीने तनख्वाह का उनको इंतजार करना पड़ता है। समय आगे बढ़ने के साथ, जो

आज कमा रहे हो, अगले दो साल के बाद कम पड़ेंगे, फिर अगले पाँच सालों में और भी कम, फिर अगले 10 सालों में और भी कम। आप इस काबिल शायद ही बन पायेंगे कि आपके पास खुद का बंगला, मोटरगाड़ी और अन्य शान्त जिन्दगी जीने के पसन्द के सामान हों। अगर आप सोचते हैं कि यह संभव नहीं है तो फिर रास्ता बदलना होगा। नौकरी नहीं, खुद का धन्धा करना होगा।

हर पीढ़ी में एक समन्वय का रास्ता हो

चूँकि आज की नई पीढ़ी नई सोच के साथ जीना चाहती है और पुरानी पीढ़ी पुरानी सोच को लिए होती है। 99.9999 प्रतिशत पिता अपने विचारों को पुत्र पर थोपना चाहते हैं। दोनों के बीच में समन्वय का अभाव होता है। बेटा पढ़ा–लिखा है, उसमें नया करने का जोश और उत्साह है। पिता नई सोच के प्रति आशंकित है। नई पीढ़ी में पुरानी पीढ़ी के लिए उपेक्षा के भाव हैं, तो पुरानी पीढ़ी में नई पीढ़ी के प्रति प्रेमभाव नहीं है। अतः दोनों के बीच तनाव है। यद्यपि बेटे को यह मानना चाहिए कि अनुभव ज्ञान से ज्यादा कीमती होता है। ज्ञान पुस्तकों से मिलता है और अनुभव जीवन से। याद रखें, किसी वृद्ध को बूढ़ा जान कर मत छोड़ देना, उसके चेहरे की एक–एक झुर्री में अनुभव के अनेक पेच छुपे हैं। सिर्फ इमारत की ऊँचाई को न देखें, उसकी नींव की गहराई को भी देखने की कोशिश करें। ज्यादा गहराई वाली नींव पर ही मकान की ऊँचाई टिक सकती है। आज का खड़ा सुन्दर महल कल की गई मेहनत पर टिका है। अतः हर पीढ़ी में एक समन्वय का रास्ता हो। अगर नई और पुरानी पीढ़ी में कुछ असमंजस की स्थिति बनती है तो एक को किश्ती नहीं मिलती और दूसरे को पतवार चलाने वाला साहिल नहीं मिलता—नतीजा, दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं।

रामचरित मानस की कथा और आज के नवयुवकों की कोचिंग क्लास

▣ *भारत के अहमदाबाद शहर में परम बैरागी संत मुरारी बापू रामचरितमानस का प्रवचन कर रहे थे। प्रवचन शाम को 3 से 7 बजे, सात रोज चला। मुरारी बापू ने देखा कि हर रोज एक नौजवान किशोर, जिसने कि पास के एक प्रसिद्ध कोचिंग सेन्टर में प्रवेश ले रखा था; कथा सुनने आता और कथा सुनते–सुनते उसकी आँखों से लगातार आँसुओं की धारा बहती रहती। संत मुरारी बापू उसे*

देख कर बड़े विभोर होकर कथा करते। अन्त में सात दिन समाप्त हुए। महात्मा बापू को विदाई देने के लिए सब रेलवे स्टेशन पर एकत्रित हुए। ट्रेन आने पर मुरारी बापू उस पर सवार हुए। हरी बत्ती हो गई और गार्ड ने विसल बजा दी।

वातावरण बड़ा भावुक हो चुका था। इतने में वह किशोर, जो सप्ताह के सात दिनों तक अनवरत प्रेम से कथा सुन रहा था, आगे बढ़ा और बापू के चरण स्पर्श किए। संत मुरारी बापू ने प्यार से आशीर्वाद दिया और कहा, बालक किशोर, तुमने कथा बड़े ध्यान से पूरे सप्ताह सुनी, उसका कोटि–कोटि आशीर्वाद। तुम्हें कुछ शंका तो नहीं रह गई?

इस पर उस किशोर ने कहा, नहीं, कोई शंका–संशय नहीं। सब–कुछ बड़ा अच्छा था। मैं अपनी कोचिंग क्लास में पढ़ने के बाद ही खाली समय में प्रवचन ध्यान से सुनता था। मगर सिर्फ एक बात समझ में नहीं आई।

वो क्या? संत बापू ने किशोर से पूछा।

माता सीता किसकी (किनकी) पत्नी थी? किशोर ने संत मुरारी बापू से पूछा।

इसका जवाब कोई नहीं सुन पाया, क्योंकि ट्रेन गति पकड़ चुकी थी और संत मुरारी बापू अपना सिर पीट रहे थे।

यही किशोर और महात्मा की बात उन सभी किशोरों पर लागू होती है जो अंधाधुंध, लक्ष्यहीन दिशा को चुनते हुए कोचिंग संस्थानों से ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। जिनके आखिरी सवाल का जवाब कौन–सा महात्मा, टीचर देगा कि पूर्ण विषय भौतिकशास्त्र की कथा एक साल सुनने के पश्चात् कोई विद्यार्थी यह पूछे कि न्यूटन कौन था तथा गुरुत्वाकर्षण शक्ति क्या है? तो इसका जवाब सिवाय माथा पीटने के अलावा क्या हो सकता है! ऐसी कोचिंग संस्थाओं में पढ़ने की बजाय अपने शहर और घर में ही अच्छे मार्गदर्शक से दिशा का ज्ञान प्राप्त कर लें तो अति उत्तम रहेगा। माँ–बाप को समय–समय पर बच्चे से परामर्श करते रहते हुए—सही मार्गदर्शन

का रास्ता चुनने में मदद देनी चाहिए। ईमानदारी से परखें और आज की परिस्थितियाँ देखें तो इस तरह के लक्ष्य की लगन घातक ज्यादा होती है, क्योंकि साल–दो साल की कठिन कोचिंग क्लासेज के बाद वास्तविक परिणाम सिर्फ 0.0001 प्रतिशत रहता है, फिर भला बाकी 99.9999 प्रतिशत युवा तो टेंशन, डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं।

बोर्डिंग नहीं—शहर की स्कूल में ही पढ़ें।

— डॉ. राम बजाज

जापान देश में वरिष्ठों का सम्मान

जापान देश में उम्र के साथ पद का सीधा सम्बन्ध होता है। यानी जितना उम्रदराज व्यक्ति, उतनी ही उसकी अहमियत, विशेषकर कम्पनी में। नागरिक जानते हैं और समझते भी हैं कि उम्रदराज व्यक्तियों का सम्बन्ध उनके अनुभव और दक्षता के हुनर से है। जिसके कारण से ही उनके सामने ज्यादा झुक कर उस के प्रति आदर व्यक्त किया जाता है। जापानी मिटिंग्स में यह परम्परा है कि जिस व्यक्ति को कम्पनी का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है, उसे सम्बोधित करते हुए ही बात की जाती है। यदि आप वरिष्ठ से असहमत हैं, तो उसे सबके सामने व्यक्त नहीं किया जाता। सबके सामने असहमति या शिकायत करना वरिष्ठ के अधिकारों को चुनौती देना माना जाता है। जो कहना है, वरिष्ठ को अकेले में कहा जा सकता है।

हमारे बुजुर्ग कहाँ जायेंगे? छोड़ आएँ उनको ओल्ड एज होम में!!

हमारे बुजुर्ग वे लोग हैं जो हमारा जीवन (अपने बच्चों का) संवारने में खुद को लगा देते हैं। वे अपनी इस बुढ़ापे की अवस्था में हमसे स्नेह और सम्मान की आशा रखते हैं। वे अपने बच्चों को प्यार कर सकें, अपनी भावी पीढ़ी को शक्ति, जानकारी, अनुभव व मार्गदर्शन दे सकें। बुढ़ापे की कहानी में जीवन के कई रंगों के साथ–साथ उतार–चढ़ाव भी देखने को मिलते हैं।

परिवार की शुरुआत माता–पिता से होती है और वह धीरे–धीरे समय के साथ एक वृक्ष का रूप ले लेता है, जिसकी जड़ें माँ–बाप होते हैं और शाखाएँ संतान। जिस हाथ की उँगली को थामकर आप बड़े हुए हैं, उसी हाथ को

आज आपके हाथ की जरूरत है तो किनारा क्यों? क्यों नहीं बन जाते हम बुजुर्ग माता–पिता की लाठी, जिसके सहारे खुशी से कट जाए उनका भी सफर?

परन्तु पश्चिमी संस्कृति के असर के कारण आज हमारा परिवार भी एकल परिवार में विश्वास करने लग गया, जिसके चलते आज हम अपने माता–पिता को दरकिनार करने लग गए हैं। आधुनिक युग में रंगी नई पीढ़ी पुरानी तहजीब, मर्यादा, संस्कार, संयुक्त परिवार जैसी बातें भूल गई है, परन्तु इस युग में उनको याद रहता है तो सिर्फ अपना स्वार्थ, अपना परिवार। हम दो, हमारे दो। इससे आगे उनको समाज के बन्धन और रीति–रिवाजों से बिल्कुल मतलब नहीं।

मत भूलो अपने पिता को

तुम भूल जाना सब–कुछ, मगर माँ–बाप को मत भूलाना

क्या जरूरत थी आपको इस उम्र में बस से आने की? गर्मी, सड़कें और बस की हालत देखी है आपने? यह नया मकान और पोते कहीं भागे थोड़े ही जा रहे थे? मैंने कह दिया था, उधर जब भी दौरे पर आऊँगा, आपको लेता आऊँगा—बेटा बाप से बोला।

पर बेटा, तेरा और पोते का इंतजार करते–करते दो साल बीत गए थे। बच्चों से मिलने की बहुत इच्छा हो रही थी, इसलिए बस से ही चला आया। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, बस या टूटी सड़कों के धक्कों से, यह तो मेरी पुरानी आदत है।—बाप बोला।

पिता को आए यहाँ एक हफ्ता ही बमुश्किल हुआ था कि बेटे ने आज्ञा दी, पिताजी, आप अपना सामान तैयार कर लीजिए। आज सरकारी कार लेकर मैं दौरे पर उधर ही जा रहा हूँ, रास्ते में आपको छोड़ दूँगा, नहीं तो फिर आपको बस में धक्के खाने पड़ेंगे।

बेटे की बातें सुन कर पिता की आँखें नम हो गईं। पर उन्हें एहसास हुआ कि आखिर उसने भी तो अपने पिता के साथ ऐसा ही व्यवहार किया था। मैंने भी तो अपनी पुरानी तहजीब, मर्यादा और संस्कार को भुला दिया, फिर इसमें मेरे बेटे का क्या कुसूर? सारा कुसूर

पश्चिमी संस्कृति और एकल परिवार की धारणा का ही तो है। आज का इनसान, स्वयं अपने माँ–बाप से दूर रह कर अपने वादों को निभाने में जान बूझ कर भूल कर रहा होता है, शायद अब यह हमारी परम्परा बन गई है। सोचने वाली बात यह है कि जिन माँ–बाप की उँगलियाँ पकड़ कर आज हम इतनी बुलन्दियों तक आ गए हैं, क्या वहाँ इतनी अधिक ऊँचाई है कि स्वयं अपने माँ–बाप ही दिखना बन्द हो गए या फिर दिखते ही नहीं?

बच्चा और माँ–बाप

जब बच्चा माँ की कोख से जन्म लेता है तो माँ ऐसी प्रसव–पीड़ा से गुजरती है जिसका अन्दाजा एक जेण्ट्स डाक्टर को भी महसूस नहीं हो सकता। इसे प्रसव–पीड़ा से गुजरने वाली औरत के दूसरे जन्म की संज्ञा दी जाती है। बच्चे को अपने सीने से लगाए पूरी–पूरी रात जागती है। बच्चे के बीमार पड़ने पर बदन के स्पर्श से उसकी आँखों से गिरते आँसू रुकने का नाम नहीं लेते। पिता हर दिन यही सपना देखता है कि जल्दी से संतान बड़ी होकर उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ले। हर माता–पिता ईश्वर से सुबह–शाम यही दुआएँ माँगते हैं कि मेरी संतान सलामत रहे और परिवार का नाम सभी क्षेत्रों में रोशन करे। लेकिन इस तपस्या के बाद विडम्बना यह होती है कि उन्हीं की संतान—उन्हीं माँ–बाप से हिसाब माँगे, तो उनके हिस्से में दुःख के सिवाय कुछ नहीं आता।

माँ–बाप से हिसाब मत लो, कहर टूट पड़ेगा

अमेरिका के फ्लोरिडा के कैंप कैनवेरल में एक छोटे लड़के जोन ने अपनी माँ को मदर डे (Mother's Day) पर एक पत्र लिख कर गुलदस्ता भेंट किया। जिसमें शुभकामनाओं के साथ–साथ कामकाज के हिसाब की एक लिस्ट भी थी। पुत्र जोन ने उसमें लिखा था कि अगर वो नहीं होता तो उसकी जगह बाहर से इन कामकाज के लिए रोज के 12 डालर का भुगतान करना पड़ता, जिसके लिए वह खुद उन दस डालर का हकदार है। हिसाब में उसने कार धोने के दो डालर, कमरा साफ करने के दो डालर, बाजार से सामान लाने व अन्य कार्य के चार डालर तथा अपने छोटे

भाई–बहिन को उनकी अनुपस्थिति में नौकरी पर जाने के बाद संभालने के लिए चार डालर, कुल मिलाकर हुए 12 डालर।

माँ ने उस खत को पढ़ा तो आँखें छलक पड़ीं, 12 डालर के नोटों के साथ उसने अपने उत्तर में लिखा कि बेटा जोन, दुनिया में माँ–बाप की कोई कीमत नहीं होती और न ही उनके प्यार की। मुझे नहीं चाहिए तुम्हारी देखभाल करने की कीमत, ना ही मुझे चाहिए अब तक हुई बीमारी में देख–रेख से ठीक होने की दुआओं की कीमत। मैं उम्मीद भी नहीं करूँगी कि अब तक स्कूल की तैयारी व होमवर्क की कितनी कीमत होती है और ना ही ख्वाब में सोच सकती हूँ कि मेरे स्तन से पिलाए गए दूध की कीमत क्या होगी? हाँ, अगर मुझे कुछ दे सकते हो तो वचन दो कि तुम हम दोनों, माँ–बाप का कहना हमेशा के लिए मानते रहोगे और बुढ़ापे में हमारा तिरस्कार नहीं करोगे। क्या तुमने कभी देखा है कि एक बुलबुल के जोड़े ने अपने को सुरक्षित पाकर कुछ तिनकों को इकट्‌ठा करके जो घोंसला बनाया है, उसमें चूजों (बच्चों) और माँ–बाप के बीच का रिश्ता, जो देखने को मिलता है वह, किसी महँगी किताब में भी दिखाई नहीं देता। बेशक, उस किताब को लिखने वाले लेखक की कीमत कितनी भी ज्यादा क्यों ना हो।

प्रिय जोन, क्या माँ–बाप अपने प्यार को भी दौलत की तराजू में तौल कर, अपनी संतानों के बीच वितरित करें? जनाब, औलाद और माँ–बाप के रिश्तों में गणित के नियम लागू नहीं हुआ करते, न ही इन रिश्तों में कोई व्यापारिक समीकरण (Equation) संभव है। शायद ही कोई ऐसे माँ–बाप हों, जो यह सोचते होंगे कि उसके बेटे से उनके रिश्तों की कीमत, वसूल करेंगे।

जब जोन वापस घर आया और उसने टेबल पर पड़े 12 डालर पर नजर डाली तो बड़ा खुश हुआ, परन्तु जैसे ही उसने खत पढ़ा, वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। उसकी आँखें भर आईं; दौड़ कर माँ की बाँहों में जाकर लिपट गया। उसके मुँह से सिर्फ यही निकला, माँ मुझे माफ कर दे। मैं उम्र–भर आपका कहना मानूँगा। उससे आगे वह कुछ बोल नहीं पाया, सिर्फ रोता रहा और रोता ही रहा। उसे अपनी जिन्दगी की गलती का एहसास हो चुका था।

माँ–बाप से हिसाब माँगने का मतलब है कि उसमें शर्म और इनसानियत नाम की चीज बची ही नहीं। दुनिया में ऐसा कौन–सा शख्स है जो माँ–बाप का कर्ज उतार सके ? औलाद अपने माँ–बाप से हिसाब माँगे उससे अच्छा तो औलाद का ना होना ज्यादा सही है। जिन्दगी की तेज दौड़ में शामिल होने के लिए, भविष्य को सुनहरा आकार देने या योजनाओं के बनाने की जल्दी में, हम एक छोटी–सी सचाई को नजरन्दाज करते हैं कि जो–कुछ आज हम हैं—वह इन्हीं माँ–बाप की बदौलत हैं। आज का इनसान स्वयं अपनी जड़ों (माँ–बाप) से दूर होकर अपने वादों को निभाने में जान–बूझ कर मशगूल रहता है, शायद अब हमारी यह गलत परम्परा बन गई है।

माँ–बाप के साथ हरगिज मत करना

1. जब धरती पर पहला साँस लिया तब माँ एवं बाप तेरे पास थे, परन्तु जब वे अन्तिम साँस लें तब तू उनके पास रहना मत भूलना।
2. जब तू छोटा था तो माँ की शय्या गीली करता था, अब जब बड़ा हो गया तो माँ की आँखें गीली मत करना।
3. पहले आँसू आते थे तो माँ याद आती थी, आज माँ याद आवे तो आँसू मत लाना।
4. माँ बिना घर नहीं होता, घर बिना माँ को मत कर देना।
5. बँटवारे के समय घर की हर वस्तु का बँटवारा होता है, माँ का बँटवारा मत कर देना।
6. बचपन के सात (Seven) वर्ष उँगली पकड़ कर तुझे (माँ–बाप) स्कूल ले जाते थे। अन्तिम सात (Seven) वर्षों में उनको सहारा देना मत भूलना।
7. घर में माँ को तो रुलाए और मन्दिर में देवी को फूल चढ़ावे, ऐसा मत करना।
8. घर में माँ से बोले नहीं, सम्हाले नहीं और आखिर में वृद्धाश्रम में दान कर दे, ऐसा हरगिज मत करना।
9. माँ–बाप से मुँह मोड़ कर उनकी आँखों में आँसू मत लाना।
10. कबूतरों को दाना डालने वाला बेटा, माँ–बाप को दाना नहीं डाले, ऐसा कोई काम मत करना।

11. और अन्त में जीवन के अंधेरे पथ में सूरज बन कर रोशनी फैलाने वाले माँ–बाप की जिन्दगी में अंधेरा कभी मत फैलाना, अन्यथा तुम्हारी जिन्दगी में अंधेरा फैल जायेगा।

अमेरिका के शिकागो शहर में आर्क डायोसिस के पास रहने वाली, अपनी माँ को लेने जब फ्राँसिस जार्ज पहुँचा और बोला, माँ, मैं बहुत परेशान हूँ, तुम कुछ दिन के लिए मेरे साथ चलो तो तुम्हारी बीमार बहू को थोड़ा आराम भी मिल जायेगा और उसकी देखभाल भी अच्छी तरह से हो जायेगी।

माँ बोली, बेटा फ्राँसिस! चार साल पहले मुझे तुम ओल्ड ऐज होम में इसलिए छोड़ गए थे कि तुम और तुम्हारी पत्नी मेरी देखभाल करने में परेशानी का सामना कर रहे थे। पिछले साल तुम्हारे और तुम्हारी बहू के पास मेरे मोतियाबिन्द के ऑपरेशन के लिए समय नहीं था। वह तो पड़ोस का लड़का एगलिंकन था जिसने तत्काल ऑपरेशन करवाया और मेरी देखभाल की। मन बहुत उदास और दुखी है। बेटा, अपने का परायापन सहन नहीं होता, परन्तु मैं कर भी क्या सकती हूँ? बेटा फ्राँसिस, बाकी के दिन मुझे परायों के साथ आराम से काटने दो।

फ्राँसिस जार्ज, अपनी माँ के पैरों में गिर पड़ा। गिड़गिड़ा कर कहने लगा, माँ, ऐसी भूल जिन्दगी में फिर दोबारा नहीं करूँगा। मुझे मेरी गलती का एहसास हो चला है। मैं वचन देता हूँ कि दुनिया में ऐसा वातावरण बनाऊँगा कि इन ओल्ड ऐज होम्स की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। बूढ़े माँ–बाप अब से अपने बेटों के साथ ही रहेंगे।

बुजुर्गों को क्या सोना–चाँदी चाहिए?

बुजुर्ग माँ–बाप भी एक नन्हे बच्चे की तरह होते हैं जिन्हें वह सब चाहिए जो बचपन में उन्होंने आपको दिया था। उनको अब सोना–चाँदी नहीं चाहिए। जो उनके पास था वो सब तो दे ही दिया। उनको चाहिए आपके कन्धे का सहारा, जब वे चल नहीं सकते। जब वे नहा नहीं सकते तब उन्हें नहलाने वाला चाहिए, जब वे खाना चबा नहीं सकते तो उन्हें तरल खाना चाहिए। जब उनका मन नहीं लगता, तो उनको बाहर घुमाने वाला चाहिए, उनके पास दो घड़ी

बैठ कर बात करने वाला चाहिए और उनको चाहिए एक हमदर्द बेटा, जो इनसान हो। परन्तु तब जवाब में आप कहेंगे, **वक्त कहाँ है, पापा ?**

एक सहारा दे दो..........

थोड़ी–सी जमीं दे दो
उन्हें आसमाँ मिल जायेगा।
थोड़ा–सा अपनापन दे दो
उन्हें सहारा मिल जायेगा।
एक छोटा–सा बसेरा दे दो
उन्हें जहाँ मिल जायेगा।
अपना दर्पण दे दो
उन्हें जीने की तमन्ना मिल जायेगी।
एक मुस्कराहट दे दो
उन्हें गुलिस्ताँ मिल जायेगा।
अपनों का एहसास दे दो
उन्हें हौसला मिल जायेगा।
उम्मीद की किरणें दे दो
उन्हें आखिरी मंजिल मिल जायेगी।
संकट में सहारा दे दो
जीवन कट जायेगा।
जीने का बहाना दे दो
एक लक्ष्य मिल जायेगा।
कुछ भी नहीं तो थोड़ा प्यार दे दो
आँसू रुक जायेंगे।
फिर कुछ नहीं तो एक 'राम' दे दो
शान्ति तो मिल ही जायेगी।

वक्त कहाँ है—अपने माँ–बाप के लिए/वाह री दुनिया!!

हम मानते हैं, आपके पास वक्त नहीं है लेकिन आपके जज्बात कहाँ गए ? वक्त की आड़ में हम अपने दायित्वों व संस्कारों से मुक्त नहीं हो सकते। जब आप

बच्चे थे, माँ गोद में नहीं उठाती और कह देती—वक्त नहीं है। आपको नहलाती नहीं और कह देती—वक्त नहीं है। आपने मल–मूत्र से कपड़े खराब कर दिये, साफ नहीं करती और कह देती—वक्त नहीं है। स्कूल की उम्र में कह देती—वक्त नहीं है, अपने–आप पढ़ लो। शायद आप यूँ ही बड़े हो जाते? अब आपकी बारी है, अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाइए। सोचने वाली बात यह है कि जिन सीढ़ियों पर चढ़ कर हम बुलन्दियों तक आ गए, क्या वहाँ इतनी अधिक ऊँचाई है कि हमें पहली सीढ़ी बहुत धुंधली दिखने लग गई है या फिर दिखती ही नहीं ? भूल गए 'ऊँची उड़ान' भरने के लिए आपके माँ–बाप ने उच्चकोटि की शिक्षा और कर्तव्यों के निर्वाह के लिए दो पंख प्रदान किए थे। मकान, सड़क, खेत, पेड़, मन्दिर, मूर्तियाँ, मस्जिद, गुरुद्वारे, धन–दौलत, ये सब चले भी गये तो वापस मिल जायेंगे, परन्तु माँ–बाप चले गए तो फिर वापस कहाँ मिलेंगे?

बेटा, पोता और दीपावली

▣ *अरे भागवान्, उठो, आज दीपावली है। पोता वरुण और बेटा राजू आज शाम लक्ष्मीपूजन के वक्त आयेंगे, उनकी पसन्द की मिठाई और पकवान बनाओ। सुबह से शाम तक दादा, दादी ने बड़ी मुश्किल से घर को झाड़–पोंछ कर, सभी तैयारियाँ करते हुए उनकी पसन्द का भोजन बनाया, जिसे बनाते–बनाते शाम हो गई थी। वे दोनों सोच रहे थे कि किसी भी वक्त उनका बेटा और पोता आ सकते हैं, इस कारण उनकी आँखें गेट की तरफ बार–बार घूम जाती थीं। इसी शहर में रह रहे पोते से मिले आज पूरा एक साल बीत गया था। पिछली दफा मिले तो दीपावली को फिर आने का वादा करके चले गए थे। लक्ष्मी–पूजन के साथ खूब आनन्द से दीपावली मनाएँगे, ऐसा सोच ही रहे थे कि दरवाजे पर खटखट की आवाज हुई, देखा कि बेटे राजू का नौकर यह संदेशा लेकर आया है कि उनका बेटा और पोता, दीपावली मनाने अपने दोस्तों के साथ कहीं चले गये हैं, जहाँ रात को थोड़ा जुआ खेल कर लक्ष्मी की पूजा करेंगे, उनसे मिलने कल आ पायेंगे। दादा–दादी के तो मानो हाथ–पैर हिलने ही बन्द हो गए।*

बेटा राजू और पोता वरुण तो भूल गए, पर आप भूल रहे हैं तो हम याद दिलादें कि आपके दादा–दादी या माँ–बाप ने भी सोचा था कि इस मकान में

हमारे बच्चों के बच्चे खेलेंगे, दीपावली मनाएँगे। मकान सिर्फ ईंट–पत्थर की बेजान इमारत नहीं होता, यह हमारे बुजुर्गों की विरासत है, उनके सपने हैं, जिन्हें जीवन्त रखना हमारी जिम्मेदारी है। क्या आपने उस सपने के बारे में सोचा है जो आपके बुजुर्गों ने इस पुश्तैनी मकान में देखा था? आज की शिक्षा और संस्कृति इस बात की साक्षी है कि हमारी शिक्षा सार्थक नहीं हो पाई है। उसमें एक ऐसी कमी है जो खटकती है और वह है नैतिक शिक्षा का अभाव, स्वतंत्र एकल परिवार में जीवन व्यतीत करना, भले ही माँ–बाप उसी शहर में तकलीफ भोग रहे हों।

हमारे समाज में विडम्बना क्या है—जरा इसको भी परखें।

काले कौए को भारतीय समाज में कभी भी सम्मानजनक दृष्टि से नहीं देखा गया। पर वर्ष–भर में मात्र 15 दिनों के लिए कौए के दिन, श्राद्ध पक्ष में पलट जाते हैं। उन 15 दिनों में हर कोई लालायित रहता है उसे सामर्थ्य के अनुसार भोग लगाने के लिए। इन 15 दिनों में उसे खूब ढूँढ़ा जाता है। छतों पर खड़े होकर हम अपने पुरखों को याद करते हुए पुकारते हैं। कौआ आता है, फिर चला जाता है। हमारे हाथ पर रखी खीर–पूड़ी, हलवे की थाली वैसी की वैसी ही रह जाती है। आँखें भर आती हैं। हम सोचते हैं, क्यों नाराज हैं हमसे हमारे पितृ? क्यों नहीं आ रहे हैं हमारे पास? तब हम समझ लेते हैं उनकी नाराजगी का कारण। खीर–पूड़ी की सजी थाली हमें याद दिला देती है, उन सूखी रोटियों की, जो अकसर हमारे बुजुर्गों की थालियों में रखी होती थीं, तब भी उनके स्नेह और ममता की छाँव हमारे साथ थी।

जमीन–जायदाद नाम करवाने के लिए खूब खातिरदारी से इतने गद्गद हो जाते थे और भूल ही गए उन कष्ट सहे दिनों को। जरा भी देर नहीं की उन्होंने दस्तखत करने में। कुछ दिन ठीक रहा, दस्तखत करने के बाद में उनके पुरानी झिड़कियों वाले दिन लौट आए।

हमने महसूस किया कि उनकी गृहस्थी ही अलग बस गई। उनके घर का एक कोना उनके लिए सुरक्षित हो गया। न किसी से बातचीत, न किसी से प्यार–मोहब्बत। अपने खुद के घर में ही बेगाने हो गए थे वे। आज वे नहीं हैं, तो कहा गया है, दादा–दादी को खीर पूड़ी दो। अवधारणा है कि वे कौए के रूप में हमारी छत पर आएंगे। जीते–जी वे एक बासी रोटी के लिए छटपटाते रहे, मरने के बाद उन्हें खीर–पूड़ी का भोग! जीते–जी वे अपने पोते–पोती को

पुकारते रहे, मरने के बाद उन्हीं की पुकार! किस समाज में जी रहे हैं हम? चलती साँसों का अपमान और बन्द साँसों का सम्मान! अगर यही समय का सच है तो एक और सच यह भी स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाएँ हम सब, अब हमारी मुँडेर पर कौआ कभी नहीं बैठेगा। दुनिया में हर इनसान को अपने तरीके से स्वर्ग जाने का अधिकार होता है—परन्तु इस अधिकार से आपने अपने पूर्वजों को वंचित कर दिया।

पूर्वज गए, कौए भी हमसे दूर हो गए, हम आखिर हम ही हैं कि इन दोनों से हमेशा के लिए दूर हो गए! पुत्रो! अभी भी थोड़ा-सा समय है। हमारे पास बुजुर्ग नाम की जो दौलत है, उसे हम नहीं खोएँ। उनकी सलाह लें, उनका मार्गदर्शन लें। उन्हें स्वर्ग जाने का मौका दें। याद रखें, मनुष्य जैसे-जैसे उम्रदराज होता है, उसका अनुभव, उसकी परख, उसके संस्कारों का खजाना उतना ही विशाल होता जाता है। परिवार का समृद्धशाली होना, बहुत कुछ बुजुर्गों के साथ व्यवहार पर निर्भर करता है। जिस तरह वटवृक्ष को सींचने की जरूरत नहीं पड़ती, वह अपनी सारी शक्ति और ऊर्जा स्वयं जमीं से लेता है, उसी तरह आने वाली नई पीढ़ी की तरक्की बुजुर्गों पर होती है। ऐसा इसलिए कि हर नई प्रगति, सुधार या अमीरी पिछली प्रगति या अमीरी से आगे का एक कदम होता है। फिर देखें, कागा नहीं, पंछियों की चहक हमारे आँगन में होगी, हम चहकेंगे, हमारी छत पर कौआ चहकेगा, और कहेगा—काँव, काँव, काँव।

माँ-बाप का नाता हमारे हृदय से है। क्या सही है, क्या गलत है—इसका चयन किसी स्कूल-कॉलेज या विश्वविद्यालय से एकमुश्त प्राप्त नहीं होता। हाँ, इसका ज्ञान जरूर माँ-बाप के रिश्तों से, उनके व्यक्तिगत संस्कारों से और उनके हृदय की विशालता के कारण होता है। संस्कार और अनुभव बाजार में बिकते नहीं हैं, जो थोक के भाव से खरीद लिये जायें और जब जरूरत पड़े, इस्तेमाल किये जायें। संस्कार और अनुभव ऊपर से नीचे की ओर आते हैं, जो हमें अपने पूर्वजों से ही प्राप्त होते हैं।

माँ-बाप का बँटवारा मत करो

आज के दौर में बच्चों के बीच माँ-बाप का बँटवारा देखने को मिल रहा है। एक भाई माँ को रखना चाहता है, दूसरा पिता को। जिन्दगी के अन्तिम पड़ाव में जब उन्हें एक-दूसरे की जरूरत होती है, उस वक्त उन्हें आप इसलिए अलग कर रहे हैं क्योंकि दो लोगों की जिम्मेदारी व दायित्व नहीं उठा सकते।

ऐसी भूल कभी भी मत करिए; अन्यथा ऊपर यमराज को जवाब देना भारी पड़ जायेगा। क्योंकि उम्र के इस मोड़ पर वे एक–दूसरे का सहारा होते हैं। यदि आप उन्हें अलग कर भी देंगे तो माँ का स्वभाव होता है कि अगले जन्म में भी वो उनका साथ निभाना चाहती है।

नरक और स्वर्ग की दूरी बराबर है

▣ *यमदूतों ने उस अंग्रेज इनसान को धर्मराज के सामने पेश किया। धर्मराज के अपने लेखाकार (Accountant) की तरफ देखते ही उन्होंने अपने सुपर कम्प्यूटर पर इस अंग्रेज व्यक्ति की जिन्दगी के भलाई–बुराई के खाते खोलकर हिसाब जोड़ा और धर्मराज को सारा सारांश कम्पयूटर की बड़ी स्क्रीन पर दरसा दिया। धर्मराज ने उस व्यक्ति को उस रास्ते पर ले जाने का संकेत किया, जिस पर तीखे काँटे और शूलें बिछी हुई थीं, जहाँ लोहे की नुकीली कीलें और काच के ताजा तोड़े हुए धारदार टुकड़े पड़े हुए थे। उस व्यक्ति को घसीटते हुए उस रास्ते पर आगे बढ़ने लगे तो उसके दोनों तरफ खड़े हुए भयानक चेहरों वाले यमदूत उसकी पीठ पर गदाएँ बरसाते रहे। उस अंग्रेज व्यक्ति ने चीख मारते हुए बड़ी मुश्किल से धर्मराजजी से पूछा—महाराज, आखिर पृथ्वीलोक पर मैंने इतनी कौनसी बुराई का रास्ता अपनाया जिससे कि मुझे 'सी' क्लास नरक में भेजा जा रहा है? आखिर मेरा बड़ा कुसूर क्या था?*

धर्मराज ने कहा, बड़ा कुसूर? अक्लमन्द व्यक्ति, तुमने अपने बूढ़े माँ–बाप को फरेब से घर से बाहर निकाल कर बेसहारा कर दिया और उनकी धन–सम्पत्ति हड़प ली। क्या तुमने यह कुसूर नहीं किया?

पर धर्मराजजी, अंग्रेज व्यक्ति बोला, इस तरह की घटनाएँ तो हमारे देश में होती ही रहती हैं।

धर्मराज ने एक बार फिर कहा, तभी तो तुम्हें 'सी' क्लास नरक मिला है।

यमदूतों ने उसे तुरन्त उठा कर नरक के एक बड़े हाल में फेंक दिया जहाँ कितने ही आदमी और औरतों की चीखें सुनाई दी और बड़ा दरवाजा बन्द कर दिया गया।

वहाँ एक ओर हिन्दुस्तान की एक स्त्री लाजवन्ती धर्मराज के सामने खड़ी, यह होते देख रही थी।

मुंशीजी, इस हिन्दुस्तानी माई का हिसाब ....? धर्मराजजी ने बात पूरी भी नहीं की थी कि तभी उन्होंने फटाफट कम्प्यूटर का बटन दबाया और बोले, महाराज ....। माई का खाता चैक कर लिया है। जाँच–पड़ताल और सारे तथ्यों के हिसाब से पता चला है कि इन्हें इज़्ज़त से 'ए' क्लास स्वर्ग में भेज दिया जाए। इनके जीवन में तो जरा–सा भी दाग–धब्बा नहीं लगा हुआ है।

अभी लेखाकार ने इतना ही कहा था कि हाल में शंखनाद व मंजीरे बजने की आवाजें आने लगीं। हाल की छत से लाल सुर्ख फूलों की बरसात होने लगी। पचीस तोपों की सलामी दी जाने लगी। गार्ड ऑफ आनर के साथ चार दूत माई को स्वर्ग की ओर ले जाने लगे ही थे कि वह ऊँची आवाज में बोल पड़ी,

ठहरो ऽऽऽऽ ....! धर्मराजजी, जरा रुको। हिन्दुस्तानी लाजवन्ती के इतना कहने पर धर्मराजजी का मुँह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया। उनके पास बैठे लेखाकार का चश्मा उतर कर उनकी टेबल पर जा गिरा। धर्मराज प्रश्नभरी नजरों से लाजवन्ती के चेहरे की तरफ देखने लगे, क्या बात है माई? क्या हमसे कोई भूल हो गई है? धर्मराजजी ने लाजवन्ती से नम्रता से पूछा। नहीं महाराज, भला आपसे भूल कैसे हो सकती है! यहाँ तो मेरा स्वार्थ है। दस वर्ष पहले मेरा पति 'परमेश्वर' तथा पाँच साल पहले मेरा बेटा श्रवण, पृथ्वी पर अपना जीवन पूरा करके आपकी शरण में आए थे। मैं तो उनके बारे में जानना चाहती थी और उनके साथ ही रहना चाहती हूँ।

हाँ माई ....! यह तो हम अभी हिसाब देख कर मिनिटों में बता देते हैं।

हाल में एक बार फिर खामोशी छा गई। काफी देर तक कम्प्यूटर स्क्रीन पर अपनी नजरें गड़ाए लेखाकार ने स्क्रीन धर्मराज की ओर

मोड़ दी। धर्मराज ने कुछ देर उस स्क्रीन पर लिखे हिसाब–किताब को पढ़ा और बोले, तेरा पति तो नरक में है।

क्या कह रहे हैं, महाराज!

हाँ माई, मैं स्क्रीन पर तुम्हारे पति–'परमेश्वर' का हिसाब देख कर ही सारी कहानी बता रहा हूँ।

महाराज ..... अच्छी तरह देखिए। मेरा पति भला नरक में क्यों जाएगा?

धर्मराज ने एक बार फिर कम्प्यूटर स्क्रीन पर नजरें गड़ाईं और दोबारा से 'की–बोर्ड' पर अपनी उंगलियों से बटन दबाते हुए एक बार फिर उसके पति–'परमेश्वर' के हिसाब का खाता खोला।

माई, हमारा हिसाब गलत नहीं हो सकता। इस वक्त तेरा पति नर्क में है और तेल के उबलते हुए कड़ाहे में उबाला जा रहा है।

लेकिन महाराज, उसका दोष क्या है? और उसे क्यों ऐसी सजा मिल रही है?

नरक और स्वर्ग चुनने का अधिकार आपका है।

माई, उसके एक ही दोष से उसके जीवन के हिसाब का पन्ना काले अक्षरों से भरा पड़ा है। पन्ने के सामने बाकी पुण्य उसके सुनहरे अक्षरों में लिखे हुए हैं, परन्तु उसका एक ही दोष इतना भयानक है कि उसे अभी नरक कुंड से बाहर निकाल दिया गया है। यमदूत उसे कोल्हू में पीसने की तैयारी कर रहे हैं।

इस बार धर्मराज बोलते जा रहे थे और लाजवन्ती चुपचाप उनके मुँह की तरफ देख रही थी। धर्मराज अपनी बात जारी रखते हुए आगे कहने लगे, माई, तुम्हारा पति क्या किसी सरकारी अस्पताल में बड़ा डाक्टर लगा हुआ था?

इसके उत्तर में लाजवन्ती ने केवल 'हाँ' में सिर हिलाया, परन्तु बोली कुछ नहीं।

माई, ले अब मैं उसका एक दोष पढ़ कर बताता हूँ, तेरे पति ने

एक मोटी रकम सरकारी दवाइयाँ खरीदने के लिए मंजूर करवाई, जो गरीब लोगों के इलाज के लिए मुफ्त बाँटी जानी थी। तेरे पति ने बिल तो असली दवाइयों के बनवाए परन्तु दवाइयाँ हू–बहू नकली खरीदीं, जिसका तुम्हारे पति को ही मालूम था। कुछ असली दवाइयाँ भी खरीदीं, परन्तु उनके इस्तेमाल की तारीखें Expiry Date निकल चुकी थीं। उन दवाइयों ने गरीबों को अच्छा तो नहीं किया, बल्कि वे ज्यादा बीमार होकर संसार से ही उठ गए। तेरे पति पर तो माई, कितने ही लोगों का खून चढ़ा हुआ है, जिसके कारण उसकी लम्बी सजाओं का सिलसिला तो उसके साथ अब चलता ही रहेगा, लेकिन तूने संसार में रह कर जो पुण्य कमाए हैं उनका फल तो तुम्हें स्वर्ग में ही मिलेगा, ये दूत तुझे स्वर्ग में ले जाने के लिए तैयार खड़े हैं।

पति परमेश्वर होता है।

▣ लाजवन्ती कुछ देर तक सिर नीचा किए अपने पति के पापों का प्रायश्चित्त करती रही और फिर वह धर्मराज की तरफ देखते हुए, नरक के दरवाजे की तरफ मुड़ कर जाने लगी।

माई लाजवन्ती, तू किधर जा रही है? यमराज ने कहा।

अपने पति के पास, चुपचाप चलते हुए लाजवन्ती ने कहा।

लेकिन क्यों ? धर्मराज ने कठोर आवाज में लाजवन्ती से पूछा।

यमराज, वह मेरा पति है। मैं एक ऐसे मुल्क हिन्दुस्तान की धरती पर रहने वाली औरत हूँ, जहाँ पुरुष चाहे कैसा भी हो, परन्तु पत्नी के लिए वह हमेशा परमेश्वर ही होता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ औरत अपने पति के गुनाहों को हमेशा क्षमा करती आई है। मैं भी उनमें से एक हूँ। मुझे अपना धर्म तो निभाना ही पड़ेगा।

धर्मराज से और कोई भी सवाल सुने बिना लाजवन्ती उस रास्ते पर चल पड़ी जो नरक की ओर जाता था।

माई, क्या अपने बेटे श्रवण के बारे में नहीं जानना चाहोगी? धर्मराज ने धीमे शब्दों में कहा।

हाँ–हाँ, क्यों नहीं, धर्मराजजी, जरा बेटे श्रवण के बारे में बताएँ कि वो कहाँ है? लाजवन्ती बोली।

बेटे ने माँ–बाप को अकेला छोड़ दिया—आखिर किस के लिए?

माई, तुम्हारा बेटा भी नरक में इसलिए है कि वह अपने माँ–बाप, यानी तुम्हें और तुम्हारे पति को बुढ़ापे में अपने दायित्वों व संस्कारों को भूलते हुए अलग छोड़ कर दूसरे शहर में चला गया और वहीं अपने बेटे और पत्नी के साथ बस गया। क्योंकि माँ–बाप की उम्र के इस नाजुक मोड़ पर, जहाँ उनको सहारा चाहिए, वहाँ बेसहारा छोड़ दिया गया। यमराज कम्प्यूटर स्क्रीन पर हिसाब देख कर बोले।

तब तो बहुत ही अच्छा रहेगा, धर्मराजजी, माई लाजवन्ती बोली।

ऐसा क्यों माई? धर्मराज बोले।

इसलिए कि एक बार फिर मुझे मेरे पति और बेटे श्रवण के साथ नरक में जीवन व्यतीत करने का एक मौका फिर से मिल रहा है—भले ही वह नरक ही क्यों ना हो! लाजवन्ती दृढ़ता से बोली।

धर्मराजजी के सवालों का जब जवाब मिल गया तो लाजवन्ती चुपचाप नरक के रास्ते की ओर चलने वाली थी, तभी धर्मराज सोच में पड़ गए कि अगर सभी इनसान लाजवन्ती की तरह अपनी सोच सुधार लें तो इनसान शैतान न बन कर—इनसान बन जायेगा। हम सभी के कुछ ध्येय, कुछ सपने होते हैं, जिन्हें पूरा करने को हम जी–जान से जुटे रहते हैं, पर जरा सोचिये, साथ रहने के सपनों को पूरा करने के प्रयासों में क्या खुशी नहीं है? अरे इनसान! इसमें तो आदि से अन्त तक की खुशी समाई हुई है! जीवन के कर्तव्य तो किसी भी हाल में पूरे करने ही हैं और हमारे दायित्व तो हमें निभाने ही हैं। जिम्मेदारियों में आनन्द प्राप्त करते हुए उन जिम्मेदारियों के हर एक पहलू को खुशी का स्रोत मानते हुए पूरा करें, भले ही नरक की यातना झेलनी क्यों ना पड़े।

लाजवन्ती के अडिग ध्येय, उसके कर्तव्यों की जिम्मेदारियों के कारण—धर्मराजजी को अपना फैसला बदलना पड़ा। उन तीनों

इनसानों को एक साथ जीने का फिर एक मौका, माई लाजवन्ती के कारण मिला।

माँ–बाप को आउट–डेटेड न समझें

आधुनिक युग के माँ–बाप ने अपने बुजुर्ग माँ–बाप को इसलिए बच्चे के जन्म–दिन पर कमरे से बाहर निकाल दिया क्योंकि वे गाँव से आए थे। यह कभी मत भूलिए की माँ–बाप, माँ–बाप ही होते हैं, चाहे साड़ी पहनें या देहाती पोशाक! माता–पिता किसी भी परिवेश में हो, उन्हें सभी से मौके पर मिलाइए कि 'आप हमारे माता–पिता हैं, हमें इन पर गर्व है।'

- *एक विशाल कोठी के बाहर लोगों की भीड़ देख कर, एक आदमी ने पूछा कि ये दोनों भाई आपस में क्यों झगड़ रहे हैं, जबकि दोनों के पास अपार दौलत है? पड़ोसी ने बताया कि बड़े भाई को वर्षों से संतान सुख से वंचित देख कर छोटे भाई ने अपनी एक लड़की उसे गोद दे दी, जिसकी बड़े भाई ने 10 साल तक परवरिश की, परन्तु बच्ची स्कूल–बस दुर्घटना में मारी गई। स्कूल व सरकार की ओर से मृतक बच्चों के अभिभावकों को पाँच–पाँच लाख रुपये की राशि बतौर मुआवजा दी जा रही है। पर दोनों भाई इस राशि पर अपना–अपना हक जमा रहे हैं। चूँकि स्कूल और अस्पताल में, जहाँ लड़की पैदा हुई वहाँ पिता के रूप में छोटे भाई का ही नाम दर्ज था। अतः स्कूल व सरकार वालों ने मुआवजे की राशि छोटे भाई को दे दी। बड़े भाई से यह नुकसान देखा नहीं गया और वह छोटे भाई के साथ लड़ रहा था। सारा मामला समझ में आने के बाद छोटे भाई ने अपने हृदय में जोर से झटका–सा महसूस किया। तुरन्त ही बड़े भाई से पेन माँगा और चैक के दूसरी तरफ यह मुआवजे की राशि अपने बड़े भाई के नाम करके उन्हें सुपुर्द कर दी। बड़े भाई ने छोटे से पूछा, आखिर ऐसा करने का क्या कारण था? छोटा भाई बोला, बड़े भैया, जब मैंने अपने कलेजे के टुकड़े को हमेशा के लिए आपको गोद दे दिया, तब मेरे दिल पर क्या बीती होगी, आपके सोचने की सीमा (Limit) में कोई बात आती है तो ठीक है, वरना, ये पाँच लाख रुपये, निश्चित ही मेरी बच्ची की कीमत तो नहीं हो सकती! चूँकि*

आपने उस बच्ची की परवरिश की थी, उस पर मेरा हक है या नहीं, इसका जवाब मैं आप पर ही छोड़ता हूँ।

बड़े भाई की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली और अपने छोटे भाई की तरफ टकटकी लगाए देखता ही रहा। उसके मस्तिष्क में तरह–तरह के खयाल आने लगे और सोचने लगा कि हालाँकि इतिहास गवाह है कि आज तक 'राम' और उसके बाद 'सीता' के निर्वासन की भरपाई कोई नहीं कर पाया। इतिहास की यही सबसे बड़ी मजबूरी है कि वह अपने पन्नों में हर तरह की भरपाई की अनगिनत गवाहियों को समेट सकता है, लेकिन सदैव के लिए अपनी गोद से निर्वासित होने की जुदाई को छोटा भाई कभी बरदाश्त नहीं कर पायेगा। वर्तमान और भविष्य विवश करते हैं उसे मौन रहने को। ताली बजाने वाला चाहे कितनी दूर चला जाए, लेकिन जब ताली बजती है तो उसकी गूँज तो सुनाई देती है, जहाँ पहले कभी ताली बजाने वाली खड़ी थी। आज बच्ची नहीं रही, परन्तु उसकी याद तो जिन्दगी की भरपाई नहीं कर पायेगी। सोचते–सोचते उसकी आँखों से अश्रुओं की धारा रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

जब हम अपने किसी प्रिय इनसान के रूप को याद करने की कोशिश करते हैं तो अतीत की इतनी स्मृतियाँ जाग उठती हैं कि हमें उस व्यक्ति का धुंधला–सा रूप इन स्मृतियों में दिखाई देता है। मानो हमारी आँखें आँसुओं के पार देख रही हो, उस बच्ची की अनगिनत यादों और स्मृतियों को।